RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 10	अंक : 10	मुम्बई, जनवरी 2021	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 10	ISSUE : 10	MUMBAI, JANUARY 2021	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2547

कमरचेडू जिला करनूल आंध्रप्रदेश स्थित भगवान पद्मप्रभ की प्राचीन प्रतिमा

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

उनके आदर्श हमारे साथ रहेंगे

कोरोना विषाणु जैसी भयानक महामारी ने जहाँ पूरे विश्व को प्रभावित किया, वहीं इस महामारी के काल में जैन समाज ने अपने कुछ अनमोल रत्नों को खोया है। यह वर्ष त्रासद तो था ही, जीवन की क्षणभंगुरता का पाठ सिखाने वाला भी था।

इस सब के बीच हमारे संस्कारों की सीख ने आशा के दीये को बुझने नहीं दिया, हमारे समाज पर भी इस महामारी का घनघोर प्रभाव पड़ा। निरंतर विहार करने वाले हमारे साधु भगवंतों के भी पैर थम गए थे, कहीं कहीं कोरोना से संक्रमित होने के समाचार भी मिले पर उनकी साधना नहीं रुकी। अनेक ऐसे परिवार जैन समाज में हैं जिनकी रोजी रोटी छिन गई थी ऐसे परिवारों की सहायता के लिए जैन समाज की सामाजिक संस्थाओं तथा व्यक्तियों ने आगे आकर बढ़-चढ़कर काम किया जिसके लिए वे सभी साधुवाद के पात्र हैं।

गुरुओं के आशीर्वाद और समाज की सेवा में आगे रहने वाले लोगों की जिजीविषा ने हमें भी इस महामारी से लड़ने का साहस प्रदान किया। इस एक वर्ष में हमने बहुत कुछ ऐसा सीखा जिसकी कल्पना भी असंभव थी, लोग ३ महीने तक घरों में बंद रहे, होटलों के खानपान व अभक्ष्य से हम दूर रहना सीखे, भागदौड़ भरे जीवन से मुक्त होकर अपने परिवार के पास रहने का सुख हमें मिला, घातक स्तर तक प्रदूषित हवा स्वच्छ हवा में बदल गई। जंगलों में रहने वाले पशु-पक्षियों ने भी खुली हवा में साँस ली।

इस महामारी के काल में जैन समाज के कुछ प्रभावशाली व महान् व्यक्तित्वों ने संसार से विदा ले ली, वे अब हमारे बीच नहीं है पर उनके आदर्श चिरस्थायी रहेंगे।

संत समाज से-

सराकोद्धारक आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज-

उन्होंने ही पहली बार बंगाल, बिहार, झारखंड व ओडिशा में सदियों से जैन संस्कारों का पालन करने वाले सराकों से जैन समाज का परिचय करवाया। उन्होंने समाज को बताया कि ये सराक लोग आदिवासी भले ही हैं पर ये हमारे ही बिछुड़े हुए जैन भाई बंधु हैं जो समय की मार झेलते -2 इस अवस्था में हैं जबकि उनके गोत्रों के नाम तीर्थंकरों के नाम पर हैं, वे शत प्रतिशत शाकाहार का पालन करते हैं, उनकी प्रेरणा व आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि सराक व रंगिया सराक जाति के लाखों लोग पुनः जैन धर्म की मुख्य धारा में जुड़ रहे हैं। ज्ञानसागर जी महाराज की सोच बहुत विरली थी इसीलिए उन्होंने जैन पेशेवरों जैसे वकील, सीए, डॉक्टर, इंजीनियर व विद्वानों को एक साथ एक मंच पर लाने का कार्य किया था।

समाधि- भगवान महावीर मोक्ष कल्याणक दिवस, १५ नवंबर २०२०

आचार्य श्री निर्मलसागरजी महाराज- जब गिरनार पर्वत पर जैन समाज का प्रभाव घट चुका था और पर्वत पर जैन तीर्थ यात्रियों के साथ अप्रिय घटनाएँ घट रही थीं तब आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज की प्रेरणा से गिरनार पर्वत की तलहटी में भव्य मानस्तम्भ युक्त समवशरण मंदिर, श्री तीस चौबीसी जिनालय एवं भगवान नेमिनाथ के २२ फुट ऊँचे भव्य

जिनबिम्ब की स्थापना की गई और दिसम्बर १९९८ में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ। इसी समय आचार्यश्री को समाज ने गिरनार गौरव की पदवी से विभूषित किया था। इस निर्माण से क्षेत्र पर दिगंबर जैन समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई और क्षेत्र पर दिगंबर जैन यात्रियों की संख्या में वृद्धि हुई है। गिरनार क्षेत्र के संरक्षण में आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। समाधि-१७ नवंबर २०२०

विद्वत् समाज से-

पं. श्री रतनलाल बैनाड़ा- जैन धर्म के मूर्धन्य विद्वान, जिनवाणी के वरद पुत्र, जन सामान्य में जिनवाणी की अलख जगाने में अभूतपूर्व योगदान देने वाले, हम सभी के प्रिय बैनाड़ाजी किसी परिचय के मुहताज नहीं है। गुरुदेव आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज व उनके सुयोग्य शिष्य मुनिपुंगव निर्यापक श्रमण श्री १०८ सुधासागर जी महाराज के मार्गदर्शन में पंड़ित जी ने धार्मिक संस्कार शिविरों की परंपरा का प्रवर्तन किया, जिससे बच्चों और युवाओं में जैनधर्म की शिक्षा का जबर्दस्त प्रभाव हुआ। उनका जीवन एक आदर्श जीवन था। निधन- १६ अगस्त २०२०

समाज सेवा व उद्योग जगत से-

श्री प्रदीप कुमार सिंह कासलीवाल-

अष्टापद बद्रीनाथ में प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की निर्वाण भूमि की स्थापना के लिए **आदिनाथ आध्यात्मिक अहिंसा फाउंडेशन** की संस्थापना उनके प्रयासों से हुई, विपरीत परिस्थितियों के बावजूद यह ऐतिहासिक कार्य पूरा हुआ। मक्सीजी में दिगंबर व श्वेतांबर जैनों के बीच के विवाद को समाप्त कराने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। उद्योग जगत में उनका नाम था और वे समाज के कामों में निरंतर सक्रिय थे। निधन- ५ सितंबर २०२० को।

श्री गणेश राणा-

जैन समाज ने श्री राणा जी जैसा एक अनमोल रत्न खोया है। वे समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाते थे। तीर्थक्षेत्र कमेटी के **संरक्षक सदस्य** थे। सांगानेर संस्थान की स्थापना में उनका योगदान अतुलनीय था। मुनियों की सेवा में उनकी लगन समाज के लिए हमेशा प्रेरणादायक रहेगी। उन्होंने राजस्थान व देश के अन्य राज्यों के प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, जीर्णोद्धार व विकास में उल्लेखनीय भूमिका भी निभाई। उनका निधन संपूर्ण जैन जगत् के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

निधन- १७ दिसंबर २०२०

इस सभी दिवंगत् आत्माओं के प्रति मैं तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और समाज से आह्वान करता हूँ कि हम इन विभूतियों के आदर्शों को न भूलें और उनके कार्यों को आगे बढ़ाएँ।

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 10 अंक 10 जनवरी 2021

श्री प्रभातचन्द्र जैन	अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा	कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी	उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)	उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल	उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला	उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला)	कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले	मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)	मंत्री
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)	मंत्री

संपादकीय सलाहकार

पद्मश्री डॉ.कैलाश मड़वैया
डॉ.श्रीमती नीलम जैन
डॉ.अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा

संपादक-साज सज्जा
श्री मनीष बैद

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन
श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री लवकेश जैन
श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
whatsapp no.- 7718859108

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

बारहवीं सदी की प्राचीन जैन प्रतिमाएँ : ग्राम शेलगाँव (महाविष्णु) जिला- परभणि, महाराष्ट्र	6
वर्तमान समय में तीर्थक्षेत्रों का स्वरूप व उनकी उपयोगिता	8
आचार्य, एलाचार्य, बालाचार्य और पट्टाचार्य	9
इस युग के महान तपस्वी आचार्यश्री सन्मति सागर जी महाराज	11
चिंतामणि तीर्थंकर पार्श्वनाथ और उनका क्रांतिकारी लोकव्यापी चिंतन	13
जननायक तीर्थंकर पार्श्वनाथ	15
प्राणी मात्र के लिए करुणा, दया, प्रेम का .... पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञान सागर	21
"मुनिभक्त जागरण सम्मेलन"	27
शाश्वत ट्रस्ट ने किया मधुबन में कार्यरत कर्मचारियों व मजदूरों को कंबल वितरण	29
सम्मेद शिखर जी पर्वत की पवित्रता अक्षुण्ण रखी जाएगी	30
कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष ने की आंध्रप्रदेश के प्राचीन क्षेत्रों की यात्रा	32

स्पष्टीकरण

दिसम्बर २०२० माह के जैन तीर्थवंदना के अंक में पृष्ठ क्र. 22 .पर प्रकाशित "कोरोना काल में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा 1600 से अधिक परिवारों की सहायता' शीर्षक से रिपोर्ट में प्रूफ न हो पाने से छप गया था कि राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने पदाधिकारियों की बैठक जूम से आयोजित की थी। यहाँ स्पष्ट किया जाता है कि कोरोना काल में कमेटी द्वारा कोई भी बैठक जूम के माध्यम से आयोजित नहीं की गई। कृपया रिपोर्ट के उस हिस्से को सुधार कर पढ़ें।

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई मेल अथवा मोबाइल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा बैठकों आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

बारहवीं सदी की प्राचीन जैन प्रतिमाएँ : ग्राम शेलगाँव (महाविष्णु) जिला- परभणि, महाराष्ट्र

मराठवाड़ा क्षेत्र के जैन इतिहास, धरोहर और मंदिरों के बारे में जैन श्रावकों को काफी न्यून जानकारी है, जबकि ये मंदिर, अवशेष और धरोहर अनेक राजवंशों जैसे राष्ट्रकूट, कल्याणी, चालुक्य और यादव शासकों के संरक्षण के फलस्वरूप जैन धर्म के इस क्षेत्र में प्रचलन और प्राचीनता का उत्कट प्रमाण है।

मराठवाड़ा क्षेत्र में महाराष्ट्र प्रान्त के बीड, लातूर, उस्मानाबाद, परभणि, जालना, नांदेड और हिंगोली जिले आते हैं। मराठवाड़ा का ऐसा ही एक अनजाना प्राचीन जैन स्थल है।

शेलगाँव

यूँ तो मराठवाड़ा में ही कई शेलगाँव हैं, किन्तु जिस गाँव की हम बात कर रहे हैं वो शेलगाँव महाविष्णु के नाम से जाना जाता है। शेलगाँव एक प्राचीन जैन विरासत है परन्तु जैन धर्मावलम्बियों की अनुपलब्धता के कारण दान और देखभाल की कमी से जूझ रहा है।

शेलगाँव (महाविष्णु) की स्थिति

शेलगाँव नामक छोटा क़स्बा महाराष्ट्र राज्य के मराठवाड़ा क्षेत्र में परभणि जिले के अंतर्गत आता है। यह स्थान परभणि जिला मुख्यालय से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण पश्चिम दिशा में और बीड जिला मुख्यालय से लगभग 95 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में विद्यमान है। यह क़स्बा गंगाखेड़ तहसील के अंतर्गत आता है।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर: स्थिति तथा महत्व

चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर शेलगाँव कस्बे के मध्य तंग गलियों में अवस्थित है और इस मंदिर से कुछ ही दूरी पर प्रसिद्ध महाविष्णु हिन्दू मंदिर स्थित है। यह जैन मंदिर न ही एक आकर्षक स्मारक है और न ही कला का उत्कृष्ट नमूना बल्कि यह मंदिर एक आम घर जैसा ही प्रतीत होता है। इस मंदिर का प्रवेश द्वार काफी छोटा है, देखने में एक सामान्य घर के प्रवेश द्वार जैसा ही प्रतीत होता है किन्तु वास्तविक मंदिर दो मंजिला तलघर में ही है क्योंकि प्राचीन खम्भे, द्वार और वेदी इत्यादि सब तलघर में ही स्थित हैं और कुछ सौ वर्ष पुरानी दिखाई पड़ती हैं,

इस मंदिर के प्रवेश द्वार के दायीं तरफ एक प्राचीन मानस्तम्भ का हिस्सा रखा हुआ है जिस पर जिन प्रतिमाओं का अंकन है। यह प्रतिमाएँ कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानरत हैं जबकि यह अंकन काफी हद तक मिट चुका है। यह मानस्तम्भ का हिस्सा लगभग 2 से 2.5 फ़ीट ऊँचा है और इसका बाकी का हिस्सा जैन मंदिर में सुरक्षित है। जैसे ही हम मंदिर में प्रवेश करते हैं, हमें एक सौम्य, आकर्षक, पवित्र और शांत प्रतिमा के दर्शन होते हैं जो जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। यह प्रतिमा लगभग 3 से 3.5 फ़ीट की ऊँचाई की काले आग्नेय पाषाण से निर्मित है। पार्श्वनाथ भगवान की यह प्रतिमा 12वीं शताब्दी से सम्बन्धित है।

भगवान पार्श्वनाथ इस जैन मंदिर के मूलनायक भगवान हैं जिनके नाम से ही इस जैन तीर्थ क्षेत्र का नाम श्री १००८ चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र रखा गया है। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अन्य धातु की प्रतिमाओं के साथ मुख्य वेदी पर विराजमान है। इस मुख्य वेदी के दोनों ओर दो आलों में अन्य तीर्थंकर प्रतिमाएँ और पंचमेरु की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। एक आले में जैन प्रतिमा से अलग हुआ तीर्थंकर प्रतिमा युक्त तोरण का

हिस्सा विराजमान है।

मंदिर के दरवाजे के पास में यक्षिणी पद्मावती की प्रतिमा विद्यमान है। इस मंदिर में स्थित तलघर का द्वार मुख्य मंदिर में से ही है। संभवतः यह तलघर मध्यकालीन युग में विधर्मी आक्रमणकारियों से जैन प्रतिमाओं की सुरक्षा के लिए बनाया गया था। इस तलघर में भी स्थित वेदी में तीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ पद्मासन अवस्था में विराजमान हैं। इस तलघर में भी एक यक्षिणी प्रतिमा भी है। इस मंदिर के तलघर के द्वितीय तल पर एक नयी वेदी का निर्माण हुआ है, जिसमें तीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ विराजमान है। यह प्रतिमाएँ महावीर, पार्श्वनाथ और नेमिनाथ तीर्थंकर की हैं।

शेलगाँव (महाविष्णु) का इतिहास

इस कस्बे का नाम यहाँ स्थित प्रसिद्ध हिन्दू मंदिर महाविष्णु के नाम पर पड़ा है। यहाँ जैन मंदिर में स्थित तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ, मानस्तम्भ का भाग, एक स्तम्भ और यक्ष-यक्षिणी प्रतिमाएँ इस कस्बे में जैन धर्म की प्राचीन उपस्थिति का प्रमाण हैं और ये अवशेष 12 वीं शताब्दी से सम्बन्धित है तब यह क्षेत्र कल्याणी चालुक्य और यादव शासकों के राज्य अंतर्गत आता था। हिन्दू महाविष्णु मंदिर भी 12 वीं शताब्दी से सम्बन्धित है।

वर्तमान स्थिति तथा दिगंबर जैन समाज का कर्त्तव्य

शेलगाँव एक प्राचीन जैन विरासत हैए परन्तु मंदिर जैन धर्मावलम्बियों की अनुपलब्धता के कारण दान और देखभाल की कमी से जूझ रहा है। यहाँ न कोई धर्मशाला है न कोई विशेष सुविधा, यहाँ पर एक मात्र जैन परिवार है जो कि श्रावक और पुजारी के सारे कर्तव्य निभा रहा है और मंदिर के पास ही कुछ दूरी पर निवास करता है।

क्षेत्र का प्रचार प्रसार होना चाहिए और आसपास के तीर्थों में पोस्टर आदि लगाने चाहिए। जब भी आप परभणि या आसपास से निकलें तब आप अधिक से अधिक संख्या में इस स्थान के दर्शन कीजिए। माझलगाँव, परभणि, परली और अम्बेजोगई के स्थानीय जैन लोगों को तो सप्ताह में या हर महीने में इस स्थान के दर्शन करने के लिए जाते रहना चाहिए। हम सभी को इस क्षेत्र के विकास के लिए और ऐसे ही कई क्षेत्रों के विकास के लिए सहयोग करना चाहिए।

- मनीष जैन, उदयपुर

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त निबंध, ग्यारह हजार रुपये नगद तथा प्रशस्ति पत्र

"वर्तमान समय में तीर्थक्षेत्रों का स्वरूप व उनकी उपयोगिता"

- सौ. श्रीमती नयना एच. जैन

संतप्त मानस शांत हो,
जिनके गुण गान में
वे वर्धमान महावीर,
विचरें हमारे ध्यान में।

आज के वैज्ञानिक युग में तीर्थक्षेत्रों की आधुनिक एवं भौतिक स्वरूप उपयोगिता बढ़ रही है इसलिए तीर्थ क्षेत्रों के बारे में जानकारी एवं वहां जाने के रास्ते आसान हो गए हैं। आज हर व्यक्ति क्षेत्रों की वर्तमान की उपेक्षा देखकर दर्शन-पूजा का लाभ प्राप्त कर रहा है।

वर्तमान में आधुनिक यश प्राप्त हो जाने से मानव आज प्रगति के शिखर पर जा रहा है लेकिन आज तीर्थक्षेत्रों पर आध्यात्मिक एवं शुद्धता की उपयोगिता में कमी महसूस देखी जा रही है।

वर्तमान में तीर्थक्षेत्रों के दर्शन को हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो -

१. हमें ऊर्जा की प्राप्ति होती है
२. शांति मिलती है।
३. तीर्थक्षेत्रों की सीढ़ियां चढ़कर आरोग्य अच्छा रहता है।
४. ज्ञान वृद्धि होती है।
५. लोगों से पहचान बढ़ जाती है।

यही उपयोगिता पाकर मन और तन पवित्र हो जाता है इसलिए कहते हैं "एक बार बंदे जो कोई, ताको नरक पशुपति नहीं होई"

तीर्थक्षेत्रों पर जिनमंदिर, शिखर है एवं उस पर ध्वजा, कलश एवं मानस्तम्भ रहता है बाहर से ही हमने अगर कलश, ध्वजा और मानस्तम्भ का दर्शन कर लिया तो पुण्य की प्राप्ति मिलने का कारण बन जाता है।

इसीलिए तो कहा जाता है "ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला ये तीर्थ हमारा" तीर्थ की इस उपयोगिता के कारण बाहर से दर्शन हो सकता है और पुण्य की प्राप्ति मिलती है।

जिस स्थान से तीर्थंकर भगवान को मोक्ष की प्राप्ति हुई हो एवं जिस स्थान से कई चमत्कारी घटनाएं घटी हो ऐसे स्थान को तीर्थक्षेत्र कहा जाता है।

तीर्थक्षेत्रों के प्रकार

सिद्धक्षेत्र- जिस क्षेत्र पर तीर्थंकरों और सामान्य केवली भगवानों को मोक्ष की प्राप्ति होती है उन्हें सिद्धक्षेत्र कहते हैं। उदा. सम्मेदशिखरजी, चंपापुर जी, पावापुरीजी, नैनागिरजी, बावनगजाजी, सिद्धवरकूटजी, मुक्तागिरी, नेमावर कुंथलगिरि, मांगीतुंगी, मथुरा चौरासी, तरंगाजी, शत्रुंजयजी, कुंडलपुर इत्यादि।

कल्याणक क्षेत्र- जिन क्षेत्रों पर तीर्थंकर भगवानों का गर्व, जन्म, तप, ज्ञान व निर्वाण कल्याण हुए हैं वे क्षेत्र कल्याणक क्षेत्र कहलाते हैं। उदा. अयोध्या जी, कौशांबी, काशी, चंद्रपुरजी, रतनपुरजी, हस्त्नापुरजी, मिथिलापुरजी, शौरीपुरजी, कुंडलपुरजी इत्यादि।

अतिशय क्षेत्र - जिन क्षेत्रों पर श्रावक के पुण्य प्रताप से उस क्षेत्रों पर देवों द्वारा चमत्कारी घटना घटती है उस क्षेत्र को अतिशय क्षेत्र कहते हैं। उदा. गोमटेश्वरजी, महावीरजी, तिजाराजी, पपौराजी, अहिछत्र पारसनाथजी, महुआ रामटेकजी, बहोरीबंदजी, अमरकंटकजी, नवागढ़जी, भातकुलीजी, नेमगिरिजी, कचनेरजी, सांगानेरजीजी इत्यादि।

कलाक्षेत्र - जिन क्षेत्रों पर कलाकार लोगों ने अपनी सिद्धहस्त कला से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है उन क्षेत्रों को कला क्षेत्र कहते हैं। उदा. गोमटेश्वरजी, महावीरजी, धर्मस्थल, शंखबस्तीजी, मूडबिद्रीजी, खजुराहो इत्यादि।

चलते फिरते तीर्थक्षेत्र - हमारे मुनिश्री एवं माताजी जो हमें जिनवाणी ज्ञान देते हैं वह भी हमारे लिए चलते फिरते तीर्थ हैं। इन तीर्थक्षेत्रों की उपयोगिता पर हम विशेष ध्यान दें।

वर्तमान में मेरे हेतु से तीर्थक्षेत्रों की उपयोगिता के दो स्वरूप हैं-
१. भौतिक उपयोगिता, २. आध्यात्मिक उपयोगिता

भौतिक उपयोगिता - जिस उपयोगिता से आधुनिक सुविधाएं एवं तीर्थक्षेत्रों पर बांधकाम, धर्मशाला, भोजनशाला, इलेक्ट्रिकसिटी फोन, लिफ्ट आदि आधुनिक सुविधा प्राप्त होती है उसे भौतिक उपयोगिता कहते हैं।

भौतिक उपयोगिता प्राप्ति स्वरूप उपाय-
१. जीर्णोद्धार, २. नव निर्माण, ३.क्षेत्र विकास, ३. वाहन व्यवस्था, ४. पूजन व्यवस्था

१. जीर्णोद्धार- सभी वेदियों के शिखरों का पुरातन स्वरूप रखने हेतु कार्य करना।

२. नव निर्माण- स्वाध्याय भवन का निर्माण एवं आधुनिक क्षेत्रों पर दवाखाना, इलेक्ट्रिसिटी कंप्यूटर, फोन, एवं वृद्ध यात्रियों के लिए लिफ्ट, रोपे व्यवस्था।

३. क्षेत्रों का विकास- यात्रियों के आवास हेतु आधुनिकतम धर्मशाला एवं कॉटेज का निर्माण करना।

४. वाहन व्यवस्था- यात्री गणों को रेलवे, बस स्टेशन से क्षेत्र में आने जाने हेतु मिनी बस की व्यवस्था करना।

५. पूजन व्यवस्था - प्रति वेदी की प्रतिदिन पूजन व्यवस्था हेतु अष्टद्रव्य सामग्री एवं शुद्ध सोले के वस्त्र दान देने वाले श्रावक को भेंट स्वरूप मानचिन्ह।

६. आध्यात्मिक उपयोगिता- जिस प्रकार के तीर्थक्षेत्रों के दर्शन प्राप्त से हमें संसार रूपी सागर पार करना आसान हो जाता है। तीर्थक्षेत्रों पर अभी भी भगवान की चमत्कारिक घटनाएं घटती हैं। और हमारे भीतर एक पॉजिटिव ऊर्जा प्राप्त होती है हमारी आत्मा जो कषाय से क्रोध, मान, माया, लोभ से मलीन होकर दुर्गति प्राप्त कर सकती है लेकिन तीर्थ दर्शन एवं पूजा करने से आत्मा की शुद्धि प्राप्त होती है, शांति मिलती है और हम अच्छी गति प्राप्त कर सकते हैं। तीर्थक्षेत्रों के मानस्तम्भ को देखकर और दर्शन करने से मान-कषायें नष्ट हो जाती हैं।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड)

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी जैनों का सर्वोच्च तीर्थक्षेत्र है यहाँ पर पर्वत की वंदना 27 किलोमीटर संपूर्ण पृथ्वी तल पर है यह शास्वत तीर्थ है कहते हैं- एक बार बंदे जो कोई ताको नरक पशुगति न होई।

तीर्थक्षेत्रों की आध्यात्मिक उपयोजना से मन पवित्र होते हैं वह अतिशय क्षेत्र हो या सिद्ध क्षेत्र, वहां के कण-कण में अनंत विशुद्ध आत्मा को कल्याण प्राप्त होता है तीर्थ क्षेत्र बंदना से कोव्यावधि उपवास का फल प्राप्त होता है। सिद्धक्षेत्र की भूमिस्पर्श से संसार ताप का नाश होता है।

तीर्थक्षेत्र की उपयोगिता स्वरूप हमारे परिणाम निर्मल, ज्ञान उज्जवल, बुद्धि स्थिर, मन की एकाग्रता, पूर्वी भव के पाप बंधनों से मुक्ति, अशुद्ध कर्म नष्ट एवं दुखी प्राणियों को आत्म शांति मिलती है।

तीर्थ क्षेत्रों पर हमेशा शुद्ध जाकर जिनेंद्र भगवान का वीतराग स्वरूप देखकर वीतरागी भावना ही रहनी चाहिए गलती से भी गलत भावना, कटु शब्द एवं अशुद्धता हो जाने से उपयोगिता में बाधाएं निर्माण होती है उसका पाप फल मिलता है।

'अन्य क्षेत्रे कृतं पापं, धर्म क्षेत्र विनश्यति
धर्म क्षेत्रे कृतं पापं, व्रजलेपो भविष्यति

वर्तमान में तीर्थक्षेत्रों पर भगवान के लिए झगड़े हो रहे हैं और हमारे वीतरागी भगवान को और तीर्थक्षेत्रों को छीनकर वहां पर पर्यटन स्थल बनाए जा रहे हैं। लेकिन हम तो अहिंसा वादी जैन हैं हम उन्हें हिंसा से ही जवाब दे सकते हैं हमारे वीतरागी भगवान को हमसे छीनकर लोग अन्य कपड़ों से उन्हें भिन्न जाति का भगवान बताते हैं और वह अन्य जाति के लोग मद पीकर प्रसाद समझकर तीर्थक्षेत्रों में अशुद्धता का निर्माण करते हैं। इस भीषण प्रसंग को देखकर अभी भी उस समय की द्रोपती के वस्त्रहरण का भीषण लज्जास्पद प्रसंग याद आता है उसी तरह का भीषण लज्जास्पद प्रसंग हमारे तीर्थक्षेत्रों के साथ हो रहा है।

वर्तमान में आपसी झगड़ों से वीतराग भगवान को लॉकडाउन में रहना पड़ता है यह भीषण लज्जास्पद प्रसंग वर्तमान में हो रहा है। इसलिए भगवान पर उपसर्व हो रहा है वर्तमान में हिंसा, कषाय क्रोध लोभ बढ़ रहा है पापकर्म से पूरी वसुंधरा फूट-फूट कर रो रही है इसलिए वर्तमान में महामारी जैसी बीमारियां पनप रही हैं और पूरे वसुंधरा पर छा रही हैं।

वर्तमान में जैनियों की संख्या से कमी आ रही है इसलिए हमें अल्पसंख्यक कहते हैं। लेकिन हम तो वर्तमान में आपसी झगड़ा मिटाते ही नहीं इसलिए जैन धर्म कम हो रहा है। ना हमें तीर्थक्षेत्रों पर ध्यान है, ना अपने मंदिरों पर, ना अपने धर्म समाज पर ध्यान है और ना ही हम अपने मुनि और आर्यिका माताओं पर ध्यान दे रहे हैं। हम आपसी झगड़ों पर ही ध्यान देते हैं जिससे अन्य हिंसावादी लोगों का तीर्थक्षेत्रों पर आक्रमण हो रहा है।

वर्तमान में हमें उपयोगिता बढ़ाने के हेतु तीर्थक्षेत्रों पर आक्रमणों की रोख सब जैनों को मिलकर उखाड़ना चाहिए हमारे चलते-फिरते तीर्थ की रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है। वे जहां-जहां जाए वहां-वहां आहार की व्यवस्था होनी चाहिए ऐसी सुविधाएं मिलकर कमेटी को बनानी चाहिए। और गरीब जैन विद्यार्थी को ज्ञान ध्यान करना चाहिए। और इधर-उधर हमारा जैन समाज शादी के लिए भटक रहा है उसका भी हमें ध्यान रखना चाहिए। जैन समाज में जैन के साथ ही विवाह करना चाहिए ताकि वह समाज जोड़ कर जैन धर्म के तीर्थक्षेत्र की रक्षा पर ध्यान देगा। और इसलिए हम कहते हैं 'तुम सब साथ दोगे, तो हम तुम्हें तीर्थ की उपयोगिता दे सकते हैं' जब जब इस वसुंधरा पर हिंसादिक क्रियाएं बंद होगी तब तब हर तीर्थक्षेत्र की शिखर, नदी, वृक्ष, पर्वत आदि मान ऊँचे कर-कर बोलेंगे कि फिर से इन तीर्थक्षेत्रों पर तीर्थंकर आ गए हैं। वही हमारे लिए सच्ची उपयोगिता कहलायेगी ★★★★

आचार्य, एलाचार्य, बालाचार्य और पट्टाचार्य

- पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन, सागर

जैनदर्शन विश्व का सर्व मान्य प्रमाणिक, प्राचीन एवं मानव कल्याण की भावना से ओतप्रोत वैज्ञानिक दर्शन है। जिसके सिद्धान्त आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले थे। इन सिद्धान्तों का कथन शास्त्रों में है और उनका अनुसरण करने वाले साधु प्रायोगिक धर्माचरण करते हैं। जो श्रमण संस्कृति, जैन दर्शन, धर्म, सिद्धान्त का उद्योतक है। जैन श्रमणचार को पालन करने वाले मुनिराज साधु परमेष्ठी और पालन कराने वाले आचार्य परमेष्ठी होते हैं।

आचार्य- साधुओं को दीक्षा, शिक्षा देने वाले, उनके दोष निवारक, दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार का निरतिचार स्वयं पालन करते हैं एवं दूसरों को भी प्रवृत्त कराते हैं और शिष्यों को इन पंचाचारों का उपदेश देते हैं। तथा अनेक गुणों से सहित संघ नायक साधु को आचार्य कहते हैं।

अतः आचार्य एकल विहारी नहीं अपितु संघ सहित ही होता है। जो परमात्मा के परिपूर्ण अभ्यास और अनुभव से जिनकी बुद्धि निर्मल हो गई है, जो निर्दोष रीति से छह आवश्यकों का पालन करते हैं, मेरु के समान निष्कम्प हैं, शूरवीर हैं सिंह के समान निर्भीक हैं, श्रेष्ठ हैं, देश कुल, जाति से शुद्ध हैं और सौम्यमूर्ति हैं। अन्तरंग और बहिरंग परिग्रह से रहित हैं आकाश के समान निर्दोष हैं ऐसे आचार्य परमेष्ठी होते हैं। जो दीक्षा, शिक्षा और प्रायश्चित देने में कुशल हैं। जो परमागम के अर्थ में विशारद हैं, जिनकी कीर्ति सब जगह फैल रही है, जो आचरण, निषेध और व्रतों की रक्षा करने वाली क्रियाओं में निरन्तर उद्यत हैं वे आचार्य परमेष्ठि हैं।

आचार्य के गुण- आचार्य आचारवान, आधारवान, व्यवहारवान, कर्ता, आयापाय, दर्शनोद्योत और उत्पीलक होता है। आचार्य अपरिस्रावी, निर्वापक, प्रसिद्ध, कीर्तिवान और निर्यापक के गुणों से परिपूर्ण

होते हैं। आचार्य आचारवान, श्रुताधार, प्रायश्चित, आसनादिदः आयापाय, कथी, दोषभाषक, अश्रावक, संतोषकारी, निर्यापक इन आठ गुणों से सहित अनुदिष्ट भोजी, शय्याशन और आरोगभुक्, क्रियायुक्त, व्रतवान, ज्येष्ठ, सद्गुण प्रतिक्रमी, षण्मासयोगी, दो-निषधक, बारह-तप, छह-आवश्यक सहित छत्तीस गुण वाले आचार्य होते हैं।

एलाचार्य- गुरु के पश्चात् जो मुनि चारित्र का क्रम मुनि और आर्यिकाओं को कहता है उसे अनुदिश अर्थात् एलाचार्य कहते हैं। अर्थात् आचार्य के पश्चात् संघस्थ साधुओं को चारित्र, व्रतादिपालन कराने वाला एलाचार्य होता है। वह छोटा आचार्य भी कहा जा सकता है। आचार्य योग्यता, वरिष्ठता के आधार पर एलाचार्य के पद से विभूषित करते हैं।

बालाचार्य- अपनी आयु अभी कितनी शेष है, इसका विचार कर, अपने शिष्य समुदाय को अपने स्थान में जिसकी स्थापना की है, ऐसे बालाचार्य को बुलाकर, सौम्य तिथि, करण, नक्षत्र और लग्न के समय शुभ प्रदेश में, अपने गुण के समान जिसके गुण हैं। ऐसे बालाचार्य अपने गच्छ का पालन करने के योग्य हैं। ऐसा विचार कर उस पर अपने गण को विसर्जित करते हैं। अर्थात् अपना पद छोड़कर सम्पूर्ण गण को बालाचार्य के लिए छोड़ देते हैं अर्थात् बालाचार्य ही यहाँ से उस गण का आचार्य समझा जाता है। उस समय पूर्व आचार्य उस बालाचार्य को थोड़ा उपदेश देते हैं।

आचार्य अपने जीवन काल में अपने योग्य शिष्य को उत्तराधिकारी के रूप में चयन कर उसे बालाचार्य नियुक्त कर संघ संचालन, शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित आदि की विधि से निष्णात कर देते हैं। अपनी अल्प आयु का बोध होते ही अपना आचार्य पद बालाचार्य को प्रदान कर देते हैं। बालाचार्य, एलाचार्य और आचार्यकल्प की क्रिया विधि लगभगसमान होती है। बालाचार्य की नियुक्ति होने पर संघ को आगामी आचार्य के विषय में निश्चिन्तता हो जाती है। संघ के साथ, आचार्य की आज्ञानुरूप बालाचार्य या एलाचार्य को अपना भावी आचार्य स्वीकार कर लेते हैं।

उत्तराधिकारी के निर्धारण होने से पूर्व यदि आचार्य की समाधि हो जाती है, तो संघस्थ साधुओं की सम्मति पूर्वक संघ के वरिष्ठ, अनुभवी, ज्ञानवान एवं कीर्तिवान साधु को आचार्य पद प्रदान कर देना चाहिए, क्योंकि संघस्थ साधुओं की शिक्षा, दीक्षा एवं प्रायश्चित आदि का दायित्व निर्वहन करना होता है। संघस्थ साधुओं की सहभागिता ही है। आचार्यपद प्रतिष्ठापन क्रिया में कहा भी है कि-

सिद्धाचार्यस्तुति कृत्वा सुलग्ने गुर्वनुज्ञया।
लात्वाचार्यपदं शान्तिं स्तुयात्साधुः स्फुरदगुणः।।

अर्थात् जिसके गुण संघ के चित्त में स्फुरायमान हो रहे हैं ऐसा साधु शुभ लग्न में सिद्धभक्ति और आचार्यभक्ति करके गुरु की आज्ञा से आचार्यपद ग्रहण कर शान्ति भक्ति करे।

क्रियासार गाथा ७८ में आचार्य भद्रबाहु स्वामी लिखते हैं कि आचार्य को एकल विहारी नहीं होना चाहिए। यथा-

संघ वइहु सीसो अर्थात् संघपतिः सह शिष्यः।

अर्थात् संघपति आचार्य शिष्यों के साथ विहार करता है। क्या समाज या संस्थायें आचार्यपद प्रदान करें- ऐसा समय भी आया जब साधु परम्परा क्षीण होने लगी थी तब साधु की योग्यता देखकर समाज ने भी आचार्य पद निर्धारित किये हैं। वे आचार्य सर्व मान्य भी हुए। ऐसे अनेक प्रसंग देखे गये हैं। किन्तु इन्हें सर्वथा न मानकर प्रसंगानुसार या समय की व्यवस्थानुरूप मान्य कहा जा सकता है। किन्तु अनेक आचार्य, साधु, संघ के सद्भाव में आचार्यपद प्रदान करने का कार्य उस परम्परा के आचार्य, साधु, संघ आदि को करना श्रेष्ठ है। समाज और संस्थायें अनुमोदना करें।

पट्टाचार्य का स्वरूप- पट्ट- आसन, सिंहासन, जिम्मेदारी, प्रमुख, प्रधान आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। पट्ट वह अधिकार है जो पूर्व अधिकारी के द्वारा प्राप्त होने पर निर्धारित संहिता का पालन करना और कराना अनिवार्य होता है। आचार संहिता का निर्धारण दो प्रकार से किया जा सकता है।

१- सैद्धान्तिक आगम आचार संहिता

२- द्रव्य, क्षेत्र, काल की अपेक्षा पट्ट परम्परा के आचार्यों द्वारा निर्धारित आचार संहिता।

पट्ट- अर्थात् अधिकार प्राप्त होने पर उसे उस पट्ट की परम्पराओं का निर्वहन करना होता है। चाहे वह आचार्य परम्परा हो, राज्य परम्परा या जातिगत व्यवस्थायें हों। पट्ट का अधिकार भी योग्यता के आधार पर पट्ट का अधिकारी ही प्रदान करता है।

परम्परा- जो क्रम पूर्वक निमित्त कारण होता है वह परम्परा का द्योतक है। परम श्रेष्ठ के अर्थ में जाना जाता है। जो श्रेष्ठता पूर्वक पिछला अगले के लिए या पहला दूसरे के लिए निमित्त कारण बनता है वह परम्परा है। पर शब्द के अनेक अर्थ हैं। जैसे- १- व्यवस्था अर्थ में वर्तता है, जैसे पहला, पिछला। २- भिन्न अर्थ में वर्तता है, जैसे पर पुत्र आदि। ३- उत्कृष्ट अर्थ में वर्तता है, जैसे श्रेष्ठ आचार्य संघ संचालन के लिए एवं जैनागम, दर्शन और सिद्धान्तों की रक्षा के लिए। समस्त शिष्यों के आचार पालन कराने की समस्तं जिम्मेदारी सौपते हैं। वह शिष्य जो अपने आचार्य के अधिकारों को प्राप्त करता है, वह पट्ट कहलाता है।

पूव आचार्य अपने उत्तरवर्ति आचार्य को क्रम पूर्वक अपने पद सौपते रहते हैं, जिससे आगम, आचार, अध्यात्म और आस्था की श्रृंखला निर्बाध रूप से गतिमान रहती है। उसे परम्परा कहते हैं। इसी क्रम से जैन दर्शन अनादि काल से प्रवाहमान है।

पट्टाचार्य परमपरा के अधिकार और जिम्मेदारियाँ- काल का परिवर्तन, उतार -चढाव, अनुकूलता- प्रतिकलता आदि के रूप में श्रावकों के आचार को सरल एवं कठिन बनाता रहता है। समय की अनुकूलता- प्रतिकलता एवं द्रव्य, क्षेत्र और काल की अपेक्षा आचार्यों ने

आचार संहिता में आगम सम्मत कुछ परिवर्तन किये हैं। इसी कारण अष्टमूलगुणों, अणुव्रतों, गुणव्रतों और शिक्षाव्रतों में एकरूपता नहीं देखी जाती है। पट्टाचार्य को अपने संघ की परम्पराओं के अनुरूप व्यक्ति समय और क्षेत्र की अपेक्षा आचार परिपालना में परिवर्तन करने का अधिकार होता है। समाधि के समय, प्रायश्चित काल में एवं पृथक बिहार के अवसर पर, आगम के परिप्रेक्ष्य में पट्टाचार्य का निर्णय अन्तिम और सर्व मान्य होता है। पट्टाचार्य आचार परिपालना में साधक को मोक्षमार्ग में लगाने की जिम्मेदारी पूर्ण निष्ठा से निभाते हैं।

पट्टाचार्य का बहुमान- अल्पकाल के दीक्षित पट्टाचार्य होने पर भी दीर्घ काल के दीक्षित साधु भी उनकी विनय करते हैं। उनके आदेश का पालन पूर्व आचार्य के आदेश की तरह ही करते हैं। प्रायचित, प्रतिक्रमण, छह आवश्यक आदि सभी क्रियाएँ इन्हीं की सन्निधि में करते हैं और पूर्ण बहुमान देते हैं।

पट्ट परम्परा का उद्भव और विकास- जैन धर्म भगवान महावीर स्वामी के बाद से अविरल रूप से गतिमान है। धर्म ध्वजा निरन्तर फहराती रही है। मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविकाएं जैन धर्म की यशोगाथा के पात्र बने रहे। किन्तु समय की अनुकूलता प्रतिकूलता में धर्म का प्रभाव कभी ज्यादा तो कभी कम होता रहा। जिसका मुख्य कारण तत्कालीन राज्य व्यवस्था या सामाजिक अस्त व्यस्तता रही है।

आचार्य पद- आचार्य अपने योग्य शिष्य को अपना आचार्यपद देकर सल्लेखना ग्रहण करते थे। इस प्रकार की परम्परा निरन्तर चलती रही। किन्तु पट्ट आचार्य लिखने की परम्परा का उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ। इसकी आवश्यकता तब हुई जब श्रमण संस्कृति का ह्रास और शिथिलाचार का प्रादुर्भाव हुआ। ऐसे समय में जिन-जिन आचार्यों ने शिथिलाचार का निरसन करके आगमानुसार चर्या का निर्धारण कर आगे आने वाले आचार्यों का मार्ग प्रशस्त किया, उनके निर्देशों की परिपालना करते हुए उनकी परम्परा के आचार्यों ने पूर्ण निष्ठा से उसका निर्वहन किया, जो पट्टपरम्परा के रूप में आज भी गतिमान है।

संदर्भ- १. भगवती आराधना मूल ४१९। २. धवला पुस्तक १,१,१। ३. भगवतीआराधना ४१७,४१८। ४. बोध पाहुड़ टीका १, ७२। ५. भगवतीआराधना १७७, ३८९। ६. भगवतीआराधना २७३, २७४। ७. क्रियासार गाथा ७८। ८.राजवार्तिक ३, ६,७

इस युग के महान तपस्वी आचार्यश्री सन्मति सागर जी महाराज

- डॉ. आशीष कुमार जैन (शास्त्री, बम्होरी), दमोह

जैन श्रमण परम्परा बहुत ही प्राचीनतम है। इस श्रमण परम्परा में अनेकों आचार्य हुए है। वर्तमान शताब्दी में भी तीन परम्परायें विद्यमान है, जिसमें मुनि कुंजर आचार्य आदिसागर जी महाराज की परम्परा, आचार्य शांतिसागर दक्षिण की परम्परा और आचार्य शांतिसागर छाणी की परम्परा है। तीनों परम्परायें आज देश में जैन धर्म की प्रभावना कर रही है एवं दिगम्बर श्रमण परम्परा को जीवंत किये हुए है। आचार्य आदिसागर अंकलीकर महाराज की परम्परा में तपस्वी सम्राट् आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज हुए है।

परम पूज्य मुनि कुंजर आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर परम्परा के तृतीय पट्टाधीश तपस्वी सम्राट् आचार्य सन्मति सागर जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन चर्या चमत्कारमय थी। आचार्य श्री का सम्पूर्ण जीवन त्यागमय व्यतीत हुआ। एटा जिले के फफोतू ग्राम में जन्में ओम प्रकाश ने नाम की सार्थकता समझते हुए अपने को पंच परमेष्ठी के पद पर प्रतिष्ठापित करने का महनीय पुरूषार्थ किया। आचार्य श्री की तपश्चर्या देखकर साधु व श्रावक सभी चकित रहते थे। वे त्याग और वैराग्य के अनुपम उदाहरण थे। आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से सन् 1961 में मेरठ में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण करतें ही आपने चार प्रकार के रस (नमक, घी, तेल, दही) का त्याग कर दिया। सन् 1962 में शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर जी में आचार्य विमलसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ग्रहण कर शक्कर का हमेशा के लिए त्याग कर दिया। आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के तप के प्रभाव के कतिपय उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं, जो उनके परम शिष्य, प्राकृताचार्य चतुर्थपट्टाधीश आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज की अनुपम कृति अनूठा तपस्वी से संकलित किये गये हैं।

सन् 1972 मथुरा चातुर्मास में आचार्य श्री ने एक माह तक केवल मूंगफली ही आहार में ली। उसमें भी उपवास हुए ही। उनके नमक तथा मीठे का त्याग ब्रह्मचर्य अवस्था से था ही। मुनि दीक्षा के बाद तेल, दही तथा घी का भी क्रमशः उन्होंने त्याग कर दिया था। केवल दूध लेते थे, सो इस चातुर्मास के

लिए दूध का भी त्याग कर दिया।

सन् 1973 में सम्मेद शिखर जी के चातुर्मास में आचार्य श्री ने केवल उबली हुई मूंग और उष्णोदक ग्रहण किया। साथ ही पर्वतराज की 108 वंदना भी की। आचार्य श्री ने सन् 1975 कलकत्ता में अनशन तप के साथ गुरुवर ने साधारण मनुष्यों की सोच के बाहर की वस्तु अन्न (अनाज) का जीवन पर्यन्त के लिए त्याग कर दिया। भक्त श्रावकों ने गुरुवर से अन्न त्याग न करने का बार-बार निवेदन किया, किन्तु वे तप और त्याग के सम्बंध में हमेशा दृढ़ रहे और श्रावकों को समझा-बुझा दिया।

गुरुवर के अन्न त्याग का समाचार कानों-कानों शहर क्या, राज्य और देश में भी फैल गया। अनेक निवेदनों और प्रश्नों के उत्तर में मुस्कराते हुए गुरुदेव ने बस इतना कहा- मैं किसी दबाव, मांग अथवा ख्याति के लिए यह त्याग नहीं कर रहा हूँ, अपितु यह मेरी तपो-साधना का अंग विशेष है। इसमें किसी को किसी भी प्रकार दुःखी और परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

पाँच रस तथा अनेक वस्तुओं का गुरुवर पहले ही त्याग कर चुके थे। कलकत्ता चातुर्मास से अन्न का महात्याग और जुड़ गया। दृढ़ता पूर्वक आचार्य श्री ने अपने व्रत-नियमों का निर्वहन किया और वह जीवन के अन्तिम समय तक निरंतर प्रवर्द्धमान रहा।

सन् 1982 चातुर्मास इटावा में तपस्वी गुरुवर ने यहाँ तेज गर्मी में ही एक एक आहार-एक उपवास का व्रत प्रारंभ कर दिया। उस पर भी दोपहर की सामायिक तेज धूप में करने लगे। ऐसे शांत-स्वभावी तपस्वी दिगम्बराचार्य से श्रावक प्रभावित हो उठे, उन्होंने गुरुवर को ससंघ चातुर्मास हेतु निवेदन किया। उत्तर में गुरुवर केवल मौन रह गए। इसे श्रावकों ने मौन स्वीकृति समझी। गुरुवर घोर तपस्वी तो थे है, इस चातुर्मास में दो माह उन्होंने जल का भी त्याग किया।

सिंहनिष्कीडित व्रत - सन् 1982 में दाहोद चातुर्मास में 144 दिनों के प्रवास में आचार्य श्री ने केवल 22 आहार किए। दाहोद चातुर्मास के प्रंसग में उन्होंने आचार्य शान्तिसागर जी महाराज की तरह सिंहनिष्कीडित व्रत को धारण किया। इस महान व्रत का क्रमश एक आहार-एक उपवास, एक आहार -दो उपवास आदि क्रम से बढ़ाते हुए एक आहार पंद्रह उपवास तक किए जाते है, फिर क्रम से पंद्रह उपवास-एक आहार, चैदह उपवास-एक आहार आदि क्रम से घटाते हुए उपवास एक आहार किया जाता है। दाहोद की सकल समाज ने भारत में एकमात्र उग्रतपस्वी गुरुवर को विशाल समारोह पूर्वक भारत गौरव की उपाधि से विभूषित किया।

आचार्य गुरु देव सम्मतिसागर जी महाराज भोजन नहीं करते, उन्होंने लगभग जीवन के अन्तिम 12 वर्षों में अड़तालीस घंटों में दिन में सिर्फ एक बार मट्ठा व पानी लिया।

जयपुर, दिल्ली, फिरोजाबाद व सन् 1997, टीकमगढ़ के चातुर्मासों में उन्होंने चातुर्मास के पहले महीने में एक आहार एक उपवास, दूसरे महीने में दो उपवास एक आहार, तीसरे महीने में तीन उपवास एक आहार तथा चैथे महीने में चार उपवास एक आहार ग्रहण किया। एक आहार चार उपवासों के क्रम में भी तपस्वी सम्राट की सिंहगर्जना यथावत चला करती थी। चातुर्मास के इस चैथे माह में केवल 6-7 ही आहार हुए। देह कृष होती गई किंतु आत्मबल बढ़ता गया। चातुर्मास में चार माह में आचार्य श्री ने केवल चालीस दिन ही आहार ग्रहण किया, शेष दिनों में वे अपनी आत्मा का ध्यान करते थे। अनेक चातुर्मासों में उन्होंने आठ से दस उपवासों की श्रृंखला भी रखी। गुरुदेव दो दिन में सिर्फ एक बार थोड़ा छाछ-पानी लेते थे उसमें भी जब आठ, दस-दस निर्जल उपवास करते थे, तो बड़े-बड़े साधु सन्त भी आश्चर्य में पड़ जाते थे।

विशेषताएं -

1. आपने दीक्षा लेते ही घी, शक्कर, नमक का आजीवन त्याग किया था।
2. आपने मथुरा चातुर्मास में पानी का भी त्याग किया था।
3. आपने शिखर जी के पहाड़ की लगातार 108 वंदना के समय एक दिन मूंग की दाल का पानी तथा एक दिन उपवास किया था।
4. आपका सन् 1975 कलकत्ता चातुर्मास से आजीवन अन्न का त्याग था।
5. आपने कुछ वर्षों बाद आजीवन दूध का त्याग कर दिया था।
6. आपने कुछ समय तक मात्र आहार में सिघाड़ा और राजगिर लिया था।
7. आपने गन्ना, केले के अलावा सभी हरी का त्याग किया था।
8. कुछ समय बाद आपने गन्ने के रस का भी त्याग कर दिया था।
9. आप आहार में मात्र छाछ-पानी लेने पर भी वास्तव्य में एकान्तर करते थे।
10. आप वर्षों से तीनों अष्टाह्निका के आठ-आठ निर्जला उपवास करते थे।
11. आप भाद्र माह के पर्युषण पर्व पर 10-10 निर्जला उपवास करते थे।
12. आप आहार के समय साधुओं की थाली लगने के बाद ही अपनी अंजुली खोलते थे।

सन् 2002 में पावागढ़ में पानी, मट्ठा और गन्ने का रस छोडकर सभी वस्तुओं का त्याग कर दिया। सन् 2003 में सलूम्बर में गन्ने के रस का त्याग कर दिया। इतने त्याग के बाद भी वर्ष में आहार के दिवस कम उपवास के दिवस अधिक होते थे, सोते नहीं थे, साधनारत रहते थे। पंचम काल की विषमताओं में भी आचार्य श्री की चर्या अनुकरणीय थी। मात्र किंचित् छाछ पर शरीर को चलाना, शरीर से पूरा काम लेना, दैनिक चर्या में किसी भी तरह की शिथिलता या प्रमाद नहीं होना यह किसी चमत्कार से कम नहीं था।

इटावा में आहार करते वक्त उनके चरणचिन्ह फर्स पर बन गए। भारत देश में अनेक साधु-संत तपस्या करते हैं, पर उनमें आचार्य श्री की तपस्या अनोखी थी। उन्होंने एक चातुर्मास के 120 दिनों में से सिर्फ 17 दिन आहार-पानी लिया है।

आज वर्तमान में आचार्य श्री का नाम इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण अक्षरों अंकित हो गया है। आप ने जीवन के अन्तिम समय में समाधि पूर्वक मरण किया। और समाधि से पूर्व आचार्य आदिसागर अंकलीकर परम्परा का पट्टाधीश पद आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज को प्रदान किया था। आचार्य सुनीलसागर जी महाराज वर्तमान में इस परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश पद पर विराजमान है। आप के द्वारा जैन धर्म की प्रभावना हो रही है। आचार्य श्री प्राकृत भाषा के कवि है आपके द्वारा लिखत पुस्तके अनेकों विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जाती है। ऐसे संतों के श्री चरणों में मेरी ओर से त्रिवार नमोस्तु।

जन्म एवं तप कल्याणक पर विशेष आलेख: तीर्थंकर पार्श्वनाथ का लोकव्यापी प्रभाव:

चिंतामणि तीर्थंकर पार्श्वनाथ और उनका क्रांतिकारी लोकव्यापी चिंतन

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी के यहां पौष कृष्ण एकादशी के दिन हुआ था। पार्श्वनाथ ने विवाह नहीं किया था। तीस वर्ष की अवस्था में एक दिन राजसभा में वे अयोध्या नरेश जयसेन के दूत से 'ऋषभदेव चरित' सुन रहे थे। सुनते ही उन्हें वैराग्य हो गया। तब अश्ववन में जाकर उन्होंने जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। तीन माह तक कठोर तप किया। दिगम्बर रहना, पैदल चलना, एकबार विधिपूर्वक भोजन और जल ग्रहण करना, यत्र-तत्र विहार करके जीवों को धर्मोपदेश देना, रात्रि में मौन रहना आदि जैसी उनकी कठिन दिनचर्या थी।

उन्होंने पौष कृष्ण की 11वीं तिथि को दीक्षा ली और श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्मेदशिखरजी पर्वत पर मोक्ष प्राप्त कर लिया। वर्तमान में सम्मेदशिखरजी झारखंड प्रांत में स्थित है। यह स्थान जैन समुदाय का प्रमुख तीर्थस्थान है। जिस पर्वत पर लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र ण पार्श्वनाथ को निर्वाण प्राप्त हुआ वह पारसनाथ पर्वत के नाम से जाना जाता है। लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं।

जैन परंपरा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ का अत्यधिक महत्व है। पूरे देश-विदेश में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमायें अत्यधिक मात्रा में पायी जाती हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के प्रति गहरी आस्था और श्रद्धा तथा अनेक चमत्कारी घटनायें जुड़ी होने के कारण उन्हें चिंतामणी, विघ्नहर्ता, अतिशयकारी, संवालिया, कलिकुण्ड, संकटहरण, चैतन्य चमत्कारी, अहिच्छत्र पार्श्वनाथ आदि अनेक नामों से श्रद्धालु जानते-मानते और पूजा-अर्चना करते हैं।
तीर्थंकर पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक हैं। उनके समय में तापस-परंपरा का प्रचलन था। तप के नाम पर लोग अज्ञानतापूर्वक कष्ट उठा रहे थे। उन्होंने व्यावहारिक तप पर जोर दिया। तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था। राजकुमार अवस्था में कमठ द्वारा काशी के गंगाघाट पर पंचाग्नि तप तथा यज्ञाग्नि की लकड़ी में जलते नाग-नागिनी का णमोकार मंत्र द्वार उद्धार कार्य की प्रसिद्ध घटना यह सब उनके द्वारा धार्मिक क्षेत्रों में हिंसा और अज्ञान विरोध और अहिंसा तथा विवेक की स्थापना का प्रतीक है।

उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा ओर उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जड़ें जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भक्ति में अनेक स्तोत्र का आचार्यों ने सृजन किया है, जैसे- श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र, इन्द्रनंदि कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, राजसेनकृत पाश्र्वनाथाष्टक, पद्मप्रभमलधारीदेव कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र,विद्यानंदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि। स्तोत्र रचना आराध्यदेव के प्रति बहुमान प्रदर्शन एवं आराध्य के अतिशय का प्रतिफल है। अतः इन स्तोत्रों की बहुलता भगवान पार्श्वनाथ के अतिशय प्रभावकता का सूचक है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारा श्रमण परम्परा में भगवान पार्श्वनाथ का ऐतिहासिक एवं गौरवशाली महत्व रहा है। भगवान पार्श्वनाथ हमारी अविच्छिन्न तीर्थंकर परम्परा के दिव्य आभावान योगी ऐतिहासिक पुरूष हैं। सर्वप्रथम डॉ. हर्मन याकोबी ने 'स्टडीज इन जैनिज्म' के माध्यम से उन्हें ऐतिहासिक पुरूष माना।

"पाश्वयुग में अब तक जो जीवन-मूल्य व्यक्ति-जीवन से संबद्ध थे, उनका समाजीकरण हुआ और एक नूतन आध्यात्मिक समाजवाद का सूत्रपात हुआ। जो काम महात्मा गांधी ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अहिंसा को लोकजीवन से जोड़ कर किया, वही काम हजारों वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दे कर दिया। यह एक अभूतपूर्व क्रान्ति थी, जिसने युग की काया ही पलट दी।

भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति,

समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है। ध्यान से देखने पर भगवान पार्श्वनाथ तथा भगवान महावीर का समवेत् रूप एक सार्वभौम धर्म के प्रवर्तन का सुदृढ़ सरंजाम है।'

तीर्थंकर पार्श्वनाथ समग्र सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता हैं। जो काम महात्मा गांधी ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अहिंसा को लोकजीवन से जोड़ कर किया, वही काम हजारों वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दे कर दिया। यह एक अभूतपूर्व क्रान्ति थी, जिसने युग की काया ही पलट दी।भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथावत है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मालव, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग-नल, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि आर्यखंड के देशों में विहार किया। उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करूणा और कल्याण की भावना रखें। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है। पार्श्वनाथ की जयंती पर जहां वाराणसी सहित पूरे देश में जन्मोत्सव धूमधाम से श्रीजी की शोभायात्रा के साथ मनाया जाता है। पूरे देश में जन्म कल्याणक को जैन समुदाय बडे ही उत्साह से मनाता है। इस दौरान विशेष पूजा-अर्चना होती है, शोभायात्रा निकालीं जाती हैं। संगोष्ठी, सेमीनार, प्रवचन होते हैं। निर्वाण दिवस पर सम्मेदशिखर जी सहित पूरे देश में निर्वाण लाडू चढाकर धूमधाम से मनाते हैं, इस दिन मुकुट सप्तमी का व्रत रखकर इसे पूरे देश में जैन समुदाय द्वारा पूरी श्रद्धा और उत्साह पूर्वक मनाने की परंपरा है। जैन परंपरा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ का अत्यधिक महत्व है।

समाचार

प्राकृत स्वाध्याय की ओर बढ़ते कदम

जयपुर में 11 जनवरी 2021 से 25 जनवरी 2021 मध्य चलेगी अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत स्वास्थ्य माला

जयपुर। प्राकृत अध्ययन एवं शोध केन्द्र, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के द्वारा 11 जनवरी 2021 से 25 जनवरी 2021 तक अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत स्वास्थ्य माला का प्रारंभ किया गया।

उद्घाटन समारोह दिनांक 11 जनवरी 2021 को ऑनलाइन प्रोग्राम के माध्यम से किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अर्कनाथ चौधरी, निदेशक केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि प्रोफेसर श्रेयांस कुमार सिंघई, विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर जगतराम भट्टाचार्य पश्चिम बंगाल, सारस्वत अतिथि डॉ धर्मेंद्र कुमार जैन, नई दिल्ली तथा डॉ सत्येंद्र कुमार जैन ने विषय प्रवर्तन किया तथा उदघाटन समारोह का संयोजन डॉ.दर्शना जैन, प्राकृत अध्ययन एवं शोध केंद्र, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के द्वारा किया।

इस अन्तर्राष्ट्रिय प्राकृत स्वाध्याय माला में देश के विभिन्न प्रान्तों से एवं कनाडा, दुबई एवं यू.एस. ए. से भी प्राकृत के जिज्ञासुओं ने भाग लिया। उदघाटन समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में प्रो. श्रेयांश कुमार सिंघई जयपुर ने प्राकृत की महत्ता को बताते हुए कहा कि यह प्राचीन समय में बोले जाने वाली मुख्य भाषा थी एवं प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन- अध्यापन की दिशा पर हम सभी को पहल करनी चाहिए। जिससे हमारे ज्ञान- विज्ञान के कोष में वृद्धि हो। प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने प्राकृत के व्याकरण और भाषा का संबंध बताते हुए कहा कि प्राकृत भाषा और उसका व्याकरण प्राचीन है एवं भगवती आराधना जिस ग्रंथ पर 15 दिन की कार्यशाला चलनी है वह शौरसेनी प्राकृत भाषा में निबद्ध है और शौरसेनी प्राकृत भाषा के साथ-साथ इसमें महाराष्ट्री प्राकृत भाषा का प्रभाव है इसके विषय में 15 दिन की कार्यशाला में हम सभी जानकारी प्राप्त करेंगे। डॉ. धर्मेंद्र कुमार जैन ने सारस्वत अतिथि के रूप में प्राकृत अध्ययन एवं शोध केन्द्र के प्रकाशन और केन्द्र की गतिविधियों के बारे में बताया। विश्वविद्यालय में लगभग 11 वर्षों से 24 प्रकाशन किए जा चुके हैं। इन 24 ग्रन्थों में ज्ञान- विज्ञान की कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई। इस विषय पर डॉक्टर सत्येंद्र कुमार जी ने भगवती आराधना की महत्ता को बताते हुए कहा कि जन्म को सुधारने या जन्म को बनाने के लिए सभी कोई प्रयत्न करते हैं परंतु मरण को सुधारने या मरण को समीचीन रूप से प्रकट करने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करता। भारतीय संस्कृति में मरण को सुधारने के लिए भी वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की व्यवस्था की गई है। इस विषय पर भगवती आराधना में वर्णन है, ग्रंथ में बताया है कि भारतीय समाज को सल्लेखना किस प्रकार से करनी चाहिए।

सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अर्कनाथ चौधरी महोदय जी ने बड़ा हर्ष व्यक्त किया कि प्राकृत अध्ययन एवं शोध केंद्र के द्वारा यह महत्वपूर्ण अभियान चलाया जा रहा है जिसमें ग्रंथों के अनुवाद एवं संस्कृत छाया के साथ-साथ इसके अध्ययन अध्यापन की दिशा पर विशेष जोर दिया जा रहा है। ऐसा प्रक्रम और भी अन्य ग्रंथों के लिए किया जाएगा, जो सभी के लिए लाभकारी भी होगा और सभी लोग इन प्राकृत ग्रंथों पर छिपे हुए सामाजिक तथ्यों को भी समझ सकेगें। इसी के साथ प्रो. कमलेश कुमार जैन में कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक (जयंती) महोत्सव (पौष कृष्ण एकादशी - 9 जनवरी)

"जननायक तीर्थंकर पार्श्वनाथ"

- डॉ. इन्दु जैन, दिल्ली

जैनधर्म में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर महावीर तक चौबीस तीर्थंकरों की लम्बी परम्परा है। तीर्थंकरों की गौरवशाली परम्परा में बनारस नगरी में जन्में तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व सम्पूर्ण देश में अत्यन्त लोकप्रिय जननायक, कष्ट विनाशक आदि रूपों में व्याप्त और प्रभावक रहा है।

धर्म-तीर्थ के कर्ता (प्रवर्तक) तीर्थंकर कहे जाते हैं।इन्हें जिन, जिनेन्द्रदेव, अर्हत्, अरिहन्त,अरहन्त, वीतरागी, सर्वज्ञ आदि अनेक विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है। मन, वाणी और शरीर द्वारा जितेन्द्रिय बनकर जिन्होंने संसार में भ्रमण कराने वाले कर्म रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, वे जिन कहे जाते हैं और इनके द्वारा प्रतिपादित धर्म जैनधर्म कहलाता है।

वर्तमान में जैन परम्परा का जो प्राचीन साहित्य उपलब्ध है, उसका सीधा सम्बन्ध चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर से है। किन्तु इनसे पूर्व नौवीं शती ईसा पूर्व काशी में जन्मे तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जो कि इस श्रमण परम्परा के एक महान् पुरस्कर्ता थे, उस विषयक कोई व्यवस्थित रूप में साहित्य वर्तमान में उपलब्ध नहीं है किन्तु अनेक प्राचीन ऐतिहासिक प्रामाणिक स्रोतों से ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में मान्य हैं। उनके आदर्शपूर्ण जीवन और धर्म-दर्शन की लोक-व्यापी छवि आज भो सम्पूर्ण भारत तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों और देशों में विविध रूपों में दिखलाई देती है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म पौष कृष्णा एकादशी को हुआ था वाराणसी के भेलूपुर स्थान में स्थित विशाल जैन मंदिर आपकी जन्मभूमि के रूप में प्रसिध्द है। तत्कालीन काशी नरेश महाराजा विश्वसेन आपके पिता एवं महारानी वामादेवी आपकी माता थीं।

अर्धमागधी प्राकृत साहित्य में उन्हें 'पुरुसादाणीय' अर्थात् लोकनायक श्रेष्ठपुरुष जैसे अति लोकप्रिय व्यक्तित्व के लिए प्रयुक्त अनेक सम्मानपूर्ण विशेषणों का उल्लेख मिलता है। वैदिक और बौद्ध धर्मों तथा अहिंसा एवं आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति पर इनके चिन्तन और प्रभाव की अमिट गहरी छाप आज भी विद्यमान है। वैदिक जैन और बौद्ध साहित्य में इनके उल्लेख तथा यहाँ उल्लिखित, व्रात्य, पणि और नाग आदि जातियाँ स्पष्टतः पार्श्वनाथ की अनुयायी थीं।

इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिन्तन ने लम्बे समय तक धार्मिक,सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया है। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था। धार्मिक क्षेत्रों में उस समय पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा आदि के लिए हिंसामूलक यज्ञ तथा अज्ञानमूलक तप का काफी प्रभाव था। किन्तु उन्होंने पूर्वोक्त क्षेत्रों में विहार करके अहिंसा का जो समर्थ प्रचार किया, उसका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा और अनेक आर्य तथा अनार्य जातियाँ उनके धर्म में दीक्षित हो गईं।

हमारे देश के हजारों नये और प्राचीन जैन मंदिरों में सर्वाधिक तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्तियों की उपलब्धता भी उनके प्रति गहरा आकर्षण, गहन आस्था और लोक व्यापक प्रभाव का ही परिणाम है। इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ का ऐसा लोकव्यापी प्रभावक व्यक्तित्व एवं चिंतन था कि कोई भी एक बार इनके या इनकी परम्परा के परिपार्श्व में आने पर उनका प्रबल अनुयायी बन जाता था।

आपने पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों विशेषकर पिछड़े क्षेत्रों में विहार (भ्रमण) करते हुए सच्चे ज्ञान और सदाचार का प्रचार करते रहे और जीवन के अंत में श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन झारखंड स्थित सुप्रसिद्ध शाश्वत जैन तीर्थ श्री सम्मेदशिखर के स्वर्णभद्रकूट नामक पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया। इन्हीं की स्मृति में इस तीर्थ क्षेत्र के समीपस्थ स्टेशन का नाम पारसनाथ प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण देश के लाखों जैन धर्मानुयायी इस तीर्थ के दर्शन-पूजन हेतु निरंतर आते रहते हैं।

सिद्धक्षेत्र कुण्डल (सांगली) में भगवान पारसनाथ की प्राचीन प्रतिमा मिली
जन्म कल्याणक के दिन धरती से प्रगटे पारसनाथ

तीर्थंकर पार्श्वनाथ व महावीर स्वामी के समवशरण आगमन से धन्य व केवली श्रीधर स्वामी की निर्वाण स्थली कुण्डल, जिला-सांगली, महाराष्ट्र में दिनांक ९ जनवरी २०२१ को प्रातः तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी की मध्यकाल की प्रतिमा प्राप्त हुई है।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के शिष्य प.पू. श्री आगमसागर मुनि महाराज, प.पू. श्री पुनीतसागर मुनि महाराज एवं प.पू. श्री सहजसागर मुनि महाराज संघ यहां विराजमान थे, प्रतिमा प्राप्त होने से दो दिन पूर्व मुनिसंघ पहाड़ पर रात में ध्यान-साधना में लीन रह रहे थे।

कुंडल गांव में तीन मंदिर हैं एक कलिकुण्ड पार्श्वनाथ स्वामी का, दूसरा गिरी पार्श्वनाथ का और तीसरा झरी पार्श्वनाथ का, यह महाराष्ट्र का प्राचीन सिद्ध तीर्थ है,इस गांव में समय-समय पर खुदाई में तीर्थंकर मूर्तियाँ मिलती रहती हैं।

बिजौलिया में होगा भव्य पंच कल्याणक महोत्सव

बिजौलियाँ तीर्थ. १ जनवरी २०२१। अतीत डरावना था, भविष्य भयानक है, लेकिन वर्तमान आनंददायक है। वर्तमान में जो है उसको संभालो। अतीत और भविष्य की चिंता मत करो।

मैं कलयुग में सुबह उठकर भगवान का नाम याद आया है, मन में अच्छा विचार आया उसको मत भूल जाना, उस अच्छे विचार को सहजो उसको याद करो। जैन धर्म ने परमार्थ से ज्यादा संसार की ही चर्चा की क्योंकि पुण्यात्मा कौन है यह तो हमें जल्दी ही समझ में आता है पापात्मा नहीं आता है।

दुनिया ने धारणा बना रखी है कि धर्म परमार्थ की ही सिद्धि करता है, संसार की नहीं। मैं आपको बताता हूँ कि धर्म संसार का विरोधी नहीं है बल्कि संसार को संभालता है, महान आत्माओं के मन में बुरे आदमियों के बारे में बुरे भाव भी नहीं आते हैं वे उनके प्रति सकारात्मक भाव रखते हैं। सम्यक्चारित्रवान जो नहीं करने योग्य हैं वह कार्य नहीं करेगा,उसके बाद व्रत और नियम आदि की शुरूआत हो जाती है।

स्थितिकरण उसका हो सकता है जो अपने नियम याद रखता है, उसके प्रति अच्छा भाव रखता है। गिरने पर खेद भाव आ रहा है तो उस जीव का स्थितिकरण हो जायेगा। आसन्न भव्य है, ज्ञानी अज्ञानी दोनी ही पापों से भागते हैं एक पाप से डर के भागता है और एक पाप करके भागता है। कमाने की चिंता मत करो कि कल क्या कमाऊँगा जो कमाया है उस की रक्षा करो उक्त आशय के उद्गार तपोदय तीर्थ बिजौलियाँ में नव वर्ष पर धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी महाराज ने व्यक्त किए।

तीर्थ वंदना के सह संपादक विजय धुर्रा ने बताया कि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद व परम पूज्य मुनि पुगंव श्री सुधा सागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य व प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया के कुशल

निर्देशन में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन १२ फरवरी से १६ फरवरी तक किया जाएगा जिसमें देश भर से भक्त भाग लेंगे।

आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए एलाचार्य श्री अतिवीर जी मुनिराज

त्रिलोक तीर्थ प्रणेता, पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज की असीम अनुकम्पा से गुरुभ्राता परम पूज्य सल्लेखनारत आचार्य श्री 108 मेरु भूषण जी महाराज द्वारा अपने परम प्रभावक अनुज-भ्राता परम पूज्य एलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज को सभी मांगलिक क्रियाएं संपन्न कर विधि-विधान पूर्वक 'आचार्य पद' पर दिनांक 20 दिसम्बर 2020 को एम. डी. जैन इण्टर कॉलेज ग्राउंड, हरी पर्वत, आगरा (उ.प्र.) में विशाल धर्मसभा के समक्ष प्रतिष्ठित किया गया। समारोह के प्रारम्भ में प्रातः काल की प्रत्युष बेला में एलाचार्य श्री का केशलोंच संपन्न हुआ| तत्पश्चात श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में श्री गणधर वलय विधान आयोजित किया|

आरोन में मुनिश्री अभयसागर जी महाराज ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन

परम पूज्य मुनि श्री अभयसागर जी महाराज ससंघ का सन दो हजार सौलह में अशोक नगर में चातुर्मास हुआ था तब से प्रति वर्ष जैन युवा वर्ग की टीम को संयम के इस महान उपकरण को सांस्कृतिक रंगों में रंग कर युवा प्रतिभाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करने का सौभाग्य मिलता रहा है।

समारोह को अपनी सुमधुर आवाज से आनंदित करते हुए युवा वर्ग के संरक्षक शैलेंद्र श्रागार ने भजनों के दारा प्रभु आराधना कर पिच्छिका परिवर्तन को नगर के इतिहास से जोड़ा ।

धर्म जहाज से आई पिच्छिका परम पूज्य श्री अभयसागर जी महाराज की पिच्छिका को मुनि भक्त जागरण सम्मेलन से जोड़कर भोपाल आयोजन की प्रस्तुति झांकी के रूप में दिखाते हुये संतों के सम्मान उनकी सेवा का सन्देश प्रसारित किया गया। पिच्छिका का विमोचन प्रतिभास्थली व पाठशाला की बहनों ने किया, पिच्छिका भेंट करने का सौभाग्य श्री मिन्टूलाल जैन को मिला।

कोरोना से वचाव के सन्देश के आई पिच्छिका परम पूज्य प्रभातसागरजी महाराज की पिच्छिका को कोरोना से बचने के सन्देश के साथ प्रस्तुत किया।

जैन समाज ने किया सम्मानित समारोह समाज के आमंत्रण पर पहुंच नगर की प्रमुख युवा समाज सेवी संस्था श्री दिगम्बर जैन युवा वर्ग के पदाधिकारियों को सम्मानित किया गया।

बच्चों ने दी संस्कृति प्रस्तुति पिच्छिका परिवर्तन समारोह के दौरान बच्चों द्वारा भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई जिसमें नृत्य कला के साथ ही लघु नाटिका का मंचन किया गया।

पिच्छिका का कोमल होना जरूरी है

समारोह को संबोधित करते हुए मुनि श्री अभयसागर जी महाराज ने कहा कि संयम के उपकरण के रूप मे दीक्षा के समय पिच्छिका और कमंडलु भेंट किए जाते हैं इसमें कमंडलु तो स्थाई रहता है। पिच्छिका की कोमलता समय बीतने के साथ कम होती जाती है जिससे सूक्ष्म जीवों की रक्षा में कमी आने लगती है। मोर वर्ष के अंत तक अपने पंख छोड़ने लगते हैं इसलिए चातुर्मास के बादु मुनिगण अपनी पिच्छिका को परिवर्तित कर लेते हैं, परिमार्जन के लिए पिच्छिका का कोमल होना जरूरी है।

मुनि श्री प्रभात सागर जी महाराज ने कहा कि मयूर पंखों से निर्मित पिच्छिका में अनेक गुण होते हैं वह धूलरोधी होती है अत्यंत मृदु होती है इसको आखों में आँजने पर आँख से आँसू नहीं आते हैं, वर्षा के जल में खराब नहीं होती है, इन्हीं गुणों के कारण मयूर पंखों से निर्मित पिच्छिका ही दिगंबर मुनिगण हमेशा अपने पास रखते हैं।

जैन दर्शन के मूल में शांति और विश्व कल्याण : ओम बिरला

लोकसभा अध्यक्ष ने वर्चुअल माध्यम से मुनि दीक्षा समारोह को किया संबोधित

नई दिल्ली, 17 दिसंबर। लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिरला ने कहा कि शांति और विश्व कल्याण में जैन समाज की अग्रणी भूमिका है। जैन दर्शन के मूल में अहिंसा, त्याग और सेवा की भावना है जिसको निभाने में जैन समाज के लोग सदैव तत्पर रहते हैं। वे गुरूवार को मध्यप्रदेश के भिंड में गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के 38वें मुनि दीक्षा दिवस और 25 समवशरण विधान समारोह को वर्चुअल माध्यम से संबोधित कर रहे थे।

लोकसभा अध्यक्ष श्री बिरला ने कहा कि भारत आध्यात्म के साथ हमेशा से ही शांति और मानवता के प्रति प्रेम का केंद्र रहा है। हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में भी आध्यात्मिकता और विश्व शांति की महत्ता का उल्लेख किया गया है। हमारे जनमानस और संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकं अर्थात् 'पूरा विश्व हमारा परिवार है' की सर्वव्यापी भावना निहित है। इसी सार्वभौमिक कल्याण की भावना से जैन धर्म भी ओत प्रोत है।

उन्होंने कहा कि महाप्रभु ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक सभी तीर्थंकरों ने बंधन को त्यागकर मोक्ष को अंगीकार किया। उनके विचारों तथा उनके जीवन से जैन दर्शन का विकास हुआ। जैन धर्म मानवता की सेवा पर भी बल देता है। इसी कारण हमें अपने आस-पास अनेक ऐसे अस्पताल, स्कूल और लोक हित के अन्य संस्थान दिखाई देते हैं जिनकी स्थापना और प्रबंधन जैन धर्म के लोगों द्वारा किया जा रहा है।

कोरोना महामारी के दौरान आमजन की सहायता के लिए जैन समाज की ओर से किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने कहा कि परोपकार, त्याग एवं दान की भावना के साथ जैन समाज मुश्किल वक्त में पूरी तत्परता और ताकत से सहायता कार्य में लगा रहा है। इस कार्य की मानवता सदैव ऋणी रहेगी।

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

जो दान-पुण्य करना है, अपने जीते जी कर लें : आचार्य विमदसागर

जो कुछ दान-पुण्य करना है कर लो, मरने के बाद क्या दान करोगे। बल्कि जब तक स्वस्थ हो तब तक करलो, इन्द्रियां शिथिल हो जाने के बाद दान-पुण्य की इच्छा नहीं होती या कर नहीं पाते। एक उदाहरण हमारे पास है। एक श्रेष्ठी मरणासन्न हो जाते हैं, बोलती बंद हो जाती है, अशक्य होजाते हैं, अब गये कि तब गये। पंच उनसे मिलने आते हैं, वे कहते हैं सेठजी कुछ अनाथ आश्रम, मंदिर-धर्मशाला आदि बनवाने के लिए दान करदें। श्रेष्ठी को अच्छा लगा किन्तु वे बोल नहीं पा रहे थे। उन्होंने सोना-चांदी दीवारों में छपाया हुआ था, उनहोंने दीवार की ओर इशारा किया कि उसमें से निकलवा लें। निकट ही उनके चारों बेटे खड़े थे, बेटों ने दीवार की ओर इशारा करने की व्याख्या की कि बाबूजी का कहना है कि जितना धन था सब इन दीवारों-मकान को बनाने में लगा दिया। बाबूजी के देहान्त के बाद बेटों ने दीवार में से धन निकाल लिया। इसलिए जो कुछ दान-पुण्य करना है अपने सगे हाथों से करें। बाद का क्या भरोसा।

ये उपदेश रतलाम में ससंघ विराजमान श्रमणचार्य श्री विमदसागर जी मुनिराज 20 दिसम्बर को एक धर्मसभा में दिये। आगे उन्होंने कहा जो दान कर दिया उसको याद नहीं करना। जो दान कर दिया उसका हिसाब किताब नहीं लगाना। जो दे दिया वह आपका नहीं है। रोज दान करो, रोज पूजा करो। कल पूजा की थी उस समय क्या भाव था, आज कैसे भाव हैं, कल कैसे भाव होंगे। अच्छा काम अर्थात् दान पूजा कर लिया उसे याद नहीं करना और पुनः पुनः करना। और बुरे कार्य बार-बार याद करना कि हमें अब ऐसा कार्य नहीं करना है। जो मोक्ष गए उनको याद करना, जो मरण को प्राप्त हो गए उनको याद नहीं करना। जो मोक्ष चले गए उनके लिए निर्वाण लाडू चढ़ाना, पर जो मरण को प्राप्त हो गए उनके नाम से लड्डू नहीं खाना। आप कैसे दरिद्र हो, मरे व्यक्ति के लड्डू खा रहे हो। एक व्यक्ति है जिसने अपने जीते जी 8 दिन भगवान की पूजा की, उत्सव किया, सारे समाज को भोजन कराया, अपने हाथों से लड्डू खिलाये हैं और कहा कि मेरे मरने के बाद तेरवां नहीं करना। जीते जी उत्सव मनाया, मरने के बाद क्या करना। घी नहीं भाता, दूध नहीं भाता, पिज्जा-मेगी चाहिए। बीमारियां बढ़ रहीं हैं, पहले व्यक्ति आवश्यकता में जीते थे इसलिए परिवार में प्रेम वात्सल्य था, पर अब व्यक्ति आकांक्षा में जीता है, कितना भी मिल जाए पर कम है। अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति में दिन-रात भागदौड़ कर रहा है। कितना भी धन मिल जाए पर तृप्त नहीं हो रहा है। पत्नी अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने में लगी है। बच्चों पर किसके संस्कार पड़ेंगे, उनका बचपन कौन सुधारेगा, बचपन नहीं सुधरेगा तो बड़े होकर आपकी बात मानने वाले नहीं हैं। आवश्यकता की पूर्ति करो, पर आकांक्षाओं के लिए मत दौड़ो। आवश्यकता से कोई दुखी नहीं है आकांक्षाओं से व्यक्ति दुखी हैं। इसलिए जो भी दान-पुण्य करना है, कर लो। धर्म अपने जीते जी कर लो, मरने के बाद कुछ नहीं कर पाओगे।

अतिशय क्षेत्र गिरार जी में जरूरतमंदों को बांटे कम्बल
भारतीय जैन संगठन मकरोनिया चैप्टर द्वारा जरूरतमंदों को कंबल वितरण

ललितपुर। इन दिनों कड़ाके की ठंड पड़ रही है जिससे गरीब, असहाय लोगों को ठंड से बचाव करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब , असहाय लोगों को ज्यादा परेशानी उठाना पड़ती है। अनेक समाजसेवी संगठन गर्म वस्त्र, कम्बल आदि ऐसे लोगों को वितरण करने आगे आ रहे हैं। इसी क्रम में सर्द हवाओं के बीच कड़कड़ाती ठण्ड से ठिठुरते लोगों के लिए ललितपुर जनपद के दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गिरार जी में भारतीय जैन संगठन चैप्टर मकरोनिया, सागर द्वारा ग्राम गिरार के गरीबों ,असहाय लोगों के लिए ठण्ड से बचाव को एक सौ से अधिक कंबलों का वितरण किया गया। इस दौरान जरुरतमंद लोगों ने कम्बल पाकर अपनी खुशी जाहिर की और इस परोपकारिता के कार्य की तहेदिल से प्रशंसा की।

गिरार क्षेत्र कमेटी के मीडिया प्रभारी डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि संगठन के सदस्यों ने सबसे पहले अतिप्राचीन आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गिरार में विराजमान मूलनायक आदिनाथ भगवान का दर्शनलाभ लिया। इसके बाद ग्राम के जरूरतमंद व गरीब लोगों को कम्बल वितरण किया।

कार्यक्रम में संगठन के जिला इकाई से जिलाध्यक्ष मनोज जैन लालो, जिला सचिव सुकमाल जैन नैनधरा, जिला कोषाध्यक्ष श्री संजय दिवाकर, श्री संपत जैन, श्री प्रदीप जैन मंगलम, श्री मनोज सक्सेस, श्री मकरोनिया चैप्टर सचिव श्री सुनील शाहगढ़, कोषाध्यक्ष श्री शांत कुमार जैन, उपाध्यक्ष श्री संजय जैन

कंट्रोल पार्षद , सह मंत्री श्री सुनील जैन, श्री आलोक जैन बरायठा, युवा जैन मिलन अध्यक्ष भाई श्री प्रसन्न जैन, मंत्री श्री सुनील जैन , सदस्य श्री नितिन पुजारी, चैप्टर से श्री कमलेश जैन सीएमओ, श्री मनीष जैन, श्री धर्मेंद्र जैन, श्री अरविंद जैन, श्री मनोज भाई, श्री नरेंद्र जैन शांति टाइल्स, श्री हेमचंद्र जैन प्रसन्न गारमेंट्स एवं बड़ी संख्या में चैप्टर के सदस्य सम्मिलित हुए। अतिशय क्षेत्र गिरार गिरी कमेटी ने भारतीय जैन संगठन ग्रुप सागर के समस्त पदाधिकारियों का स्वागत किया।

भारतीय जैन संगठन ग्रुप के सभी सदस्यों ने अभिषेक एवं शांति धारा, पूजन के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर पुण्य अर्जन किया। आभार श्री अभिषेक जैन (दीपू) मड़ावरा महामंत्री अतिशय क्षेत्र गिरार गिरी जी एवं प्रदीप जैन खुटगुवां ने व्यक्त किया।

दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र की पूजा
बानपुर वंदना का लोकार्पण

ललितपुर. कलात्मक दि.जैन अतिशय तीर्थ बानपुर (बुदेलखण्ड) में भगवान शान्तिनाथ की उत्तुंग मूर्ति व अद्वितीय सहस्राकूट चैत्यालय के तीर्थ प्रांगण में, उत्तर प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन मंत्री श्री मनोहर लाल पंथ ने पद्मश्री साहित्यकार डॉ. कैलाश मड़बैया द्वारा रचित बानपुर तीर्थ पूजा-सद्यः प्रकाशित ग्रंथ 'बानपुर वन्दना' का लोकार्पण करते हुये निरुपित किया कि श्री मड़बैया की यह कृति आध्यात्मिक साहित्य और पुरातात्विक क्षेत्र में मान्य होगी। पद्मश्री कैलाश मड़बैया के जन्म स्थान बानपुर तीर्थ में उनका नागरिक अभिनन्दन किया गया। तीर्थ परिसर में श्री मड़बैया का गीत गूँजा --

"मातृभूमि को वरद् वंदना और चढ़ाने आया हूँ।

तीर्थ बानपुर को भारत का सिरमौर बनाने आया हूँ।"

उत्तर प्रदेश के श्रम मंत्री श्री मनोहर पंथ ने कहा कि कैलाश मड़बैया के सतत् उत्कृष्ट सृजन के कारण ही उन्हें पद्मश्री अलंकरण और अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। जैन तीर्थ क्षेत्र के प्रमुखों ने कहा कि कैलाश मड़बैया हमारे ही नहीं जैन-माथे के कीर्ति कलश कैलाश हैं उनकी कृति 'बानपुर वन्दना' हर श्रमण समाज के घर घर, मन्दिर मन्दिर व तीर्थ में बुदेली भक्तामर की तरह प्रतिदिन प्रातः काल आराधना के रुप में पढ़ी जायेगी। पूजन 'बानपुर वन्दना' की संगीतिक प्रस्तुति गीतकार सत्यनारायण तिवारी टीकमगढ़ व ललितपुर के जैन कलाकारों द्वारा मोहक ढ़ंग से प्रस्तुत की गई और बड़े बाबा को ग्रंथ समर्पित किया गया।

प्राणी मात्र के लिए करुणा, दया, प्रेम का उपहार प्रदान करने वाले पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञान सागर

- पं. देवेश कुमार जैन "बलेह

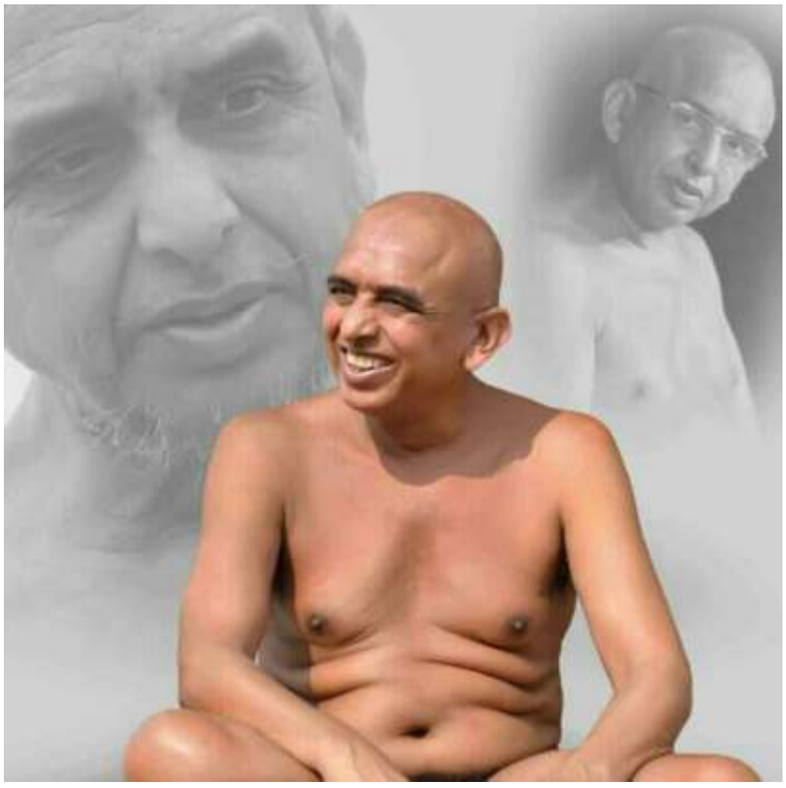

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महराज के आसमयिक निधन (समाधि) का समाचार सुन मन व्यथित हुआ,एक समय के लिए तो यह सुनकर मन को विश्वास ही नहीं हुआ,लेकिन आयु कर्म जीव का जितना हो उसके बाद शरीर छोड़ना ही पड़ता है, और ये त्रैकालिक सत्य है! आप आचार्य श्री शांति सागर जी महराज छाणी परम्परा से षष्ठम पट्टाचार्य थे!जिन धर्म मार्ग से च्युत हो चुके ऐसे व्यक्ति सराक कहलाते थे, और उनके कल्याण हेतु पुनःधर्म मार्ग में स्थित किया इसलिए आप सराकोद्धारक कहे जाते हैं! परम पूज्य सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महराज दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा से थे, वर्तमान काल में भी चतुर्थ कालीन श्रमणों जैसी उत्कृष्ट साधना एवं चर्या का पालन करने वाले साधु की समाधि निश्चित तौर पर ही समाज एवं राष्ट्र के लिए अपूर्णीय क्षति है! जिसकी पूर्ति त्रैकालिक असम्भव है! प्राणी मात्र के लिए करुणा, दया, प्रेम का उपहार प्रदान करने वाले, जन-जन के मसीहा के रूप में हर दिल में स्थान बनाने बाले अहिंसा के प्रचारक, शाकाहार प्रवर्तक, सामाजिक सरोकार के साथ प्राणी मात्र के प्रति संवेदनशील होकर अपनी चर्या मैं दृढ़ रहने वाले दिगम्बर मुनि के रूप में आपने चहुँ दिश,सम्पूर्ण भारत में पग बिहार कर धर्म प्रभावना की कोरोना संकट समय काल में भी धर्म प्रभावना जूम एप एवं गूगल मीट के माध्यम से भी आयोजन सानंद सम्पन्न हुए जैन प्रतिभा सम्मान समारोह, उच्च पदों पर आसीन डाक्टर्स,इंजीनियर्स,एडवोकेट आदि सम्मेलनों को भी आयोजित करवाया और धर्म प्रभावना की! समाज के सभी बर्गों एकत्रित कर सम्मेलनों आदि का आयोजन कर आपने एकता का संदेश दिया आप जैन एकता के प्रबल पक्षधर थे! आपकी प्रेरणा से जेलों में कैदियों का हृदय परिवर्तन हुआ साथ ही साथ आपके बचनों से प्रेरणा लेकर प्रभावित होकर अपराधियों ने अहिंसा मार्ग को अपनाया और अपनाने का दृढ़ निश्चय भी किया! गुरुदेव के व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए शब्द भी कम पड़ जायेंगे गुरुदेव का व्यक्तित्व विराट एवं विशाल था सम्यग्दर्शन की महिमा, सम्यग्ज्ञान की गरिमा, सम्यक्चारित्र की परिपक्वता प्रदर्शित होती थी अखिल भारत बर्षीय दिग.जैन शास्त्री परिषद के ऊपर भी गुरुदेव का आशीर्वाद था!पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से श्रुत संवर्द्धन संस्थान मेरठ के तत्वावधान में भारत देश के विभिन्न प्रांतों में संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ शिविर में धर्म प्रभावना करने का अध्यापन कार्य का अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ साथ ही साथ गुरुदेव के आशीर्वाद से मुझे क्षेत्रीय संयोजक बनने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ और गाजियाबाद शहर में पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ यह मेरे लिए परम सौभाग्य की बात रही यह गुरुदेव के वात्सल्य को प्रदर्शित करता है! आपका मार्गदर्शन समाज के लिए प्रेरणा दायी था, पूज्य गुरुदेव निःसंदेह उच्च कोटि के साधक थे साथ ही साथ न्याय शास्त्रों का अच्छा ज्ञान भी था दर्शन,न्याय के शास्त्र को पढ़ने की विशिष्ट रुचि रखते थे!आपके मार्गदर्शन में अनेकों बिधान, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, वेदी प्रतिष्ठा, पाठशालाऔं आदि का आयोजन होता रहा!

श्री दिगंबर सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में आचार्य श्री पारस सागर जी महाराज की हुई समाधि

श्री दिगंबर सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में आचार्य श्री पारस सागर जी महारज का ससंघ चातुर्मास हुआ। आज दिनांक 26/12/2020 दिन शनिवार को द्रोणगिरि क्षेत्र की पावन भूमि पर आचार्य श्री ने समाधि धारण की। आचार्य श्री के ससंघ साधुओं एवं क्षेत्र के सभी धर्मावलम्बियों को महाराज श्री को णमोकार मंत्र एवं ऊं नमः सिद्धेभ्यः के मंत्र का उच्चारण करते हुए वैयावृत्ति का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के मंत्री श्री भागचंद जैन पीली दूकान, प्रबंधक श्री पवन जैन, श्री दीपक जैन एवं क्षेत्र के समस्त कर्मचारियों ने महाराज श्री के अंतिम चरणों में आचार्य श्री को भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित की।

आचार्य श्री पारस सागर जी महाराज का संक्षिप्त परिचय

पूज्यश्री का नाम- १०८ आचार्य श्री पारस सागर जी महाराज
ग्रहस्थावस्था का नाम- प्रतिष्ठाचार्य पं. भागचंद्र जैन "इन्दु"
जन्मतिथि- मगशिर कृष्णा ७ गुरुवार संवत् २००१
जन्म स्थान- गुलगंज, (छतरपुर) म. प्र.
माता का नाम- स्व. श्रीमती प्यारीबाई सिंघई
पिता का नाम स्व.- श्री विन्द्रावन लाल जैन (राजवैद्य)
लौकिक शिक्षा- एम. ए., साहित्य रत्न, आर्युवेद रत्न

धार्मिक जीवन

मुनि दीक्षा- ८ अगस्त, २००८, सिद्धक्षेत्र सोनागिरी (म. प्र.)
द्वारा- आचार्य १०८ विवेक सागर जी महाराज
आचार्य पदारोहण- १३ नवंबर,२०११, अतिशय क्षेत्र कर गुवाँजी झाँसी (उ. प्र.)
पदारोहणकर्ता – दोना पद आचार्य १०८ श्री मेरूभूषण जी महाराज
उपाधि- वात्सल्यमूर्ति
समाधिमरण – 26 दिसंबर 2020, श्री दिगंबर सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (म. प्र.)

क्षुल्लक श्री ध्यान भूषण महाराज की सौरई में हुई समाधि
जिस ग्राम में जन्म लिया उसी में हुई समाधि

ललितपुर। त्रिलोक तीर्थ प्रणेता आचार्य 108 श्री सन्मतिसागर जी महाराज के शिष्य सौंरई नगरी के गौरव क्षुल्लक 105 श्री ध्यानभूषण जी महाराज की मध्य रात्रि में अपने जन्म स्थान सोंरई (मड़ावरा) उत्तर प्रदेश में अकस्मात् समाधि हो गई। जैसे ही श्रद्धालुओं को यह खबर लगी उनके अंतिम दर्शनार्थ उमड़ पड़े।

श्रद्धालुओं ने अंतिम दर्शनों के साथ भावुकता पूर्ण अंतिम विदाई दी। ग्राम में उनकी डोल यात्रा निकाली गई। प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जय निशांत जी के निर्देशन में पूरे विधि विधान के साथ उनके अंतिम संस्कार की क्रियाओं को किया गया। पंडित श्रवण जैन (क्षुल्लक जी के गृहस्थ अवस्था के भाई), पंडित श्री देवेंद्र कोठिया, पंडित संतोष शास्त्री, पंडित श्री आकाश जैन आदि ने विधि विधान की क्रियाओं में सहभागिता की।

इस दौरान सौरई ग्राम के जैन-जैनेतर बन्धु शामिल रहे वहीं मड़ावरा ,बमोरी, सैदपुर, साढूमल, रजोला ,सागर, पटना ,नैनागिर, महरौनी, टीकमगढ़, दमोह, बड़ागांव ,बंडा, शाहगढ़ आदि से प्रमुख श्रद्धालु शामिल रहे।

उनकी अकस्मात समाधि पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद, दिगम्बर जैन पंचायत समिति, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद, उत्तर प्रदेश उत्तराखंड तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय साढूमल, अतिशय क्षेत्र नवागढ़, गिरार, कारीटोरन,

मदनपुर कमेटी, महासमिति, महासभा, जैन मिलन, प्रभावना जन कल्याण परिषद (रजि.) आदि संस्थाओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की है।

डॉ सुनील संचय ने बताया कि क्षुल्लक श्री ध्यान भूषण जी स्वभाव से सरल , सहज थे। आपने वीर स्तुति कला कुंज, वर्धमान महाकाव्य , अनुशासन काव्य, गुरु भाग्योदय शतक, त्रिकालवर्ती तीर्थंकर शतक आदि

कृतियों, काव्यों की रचना की। इन कृतियों से वे सदा अमर रहेंगे। क्षुल्लक दीक्षा अतिशय क्षेत्र मदनपुर में 1989 में आचार्य श्री सन्मति सागर जी ने प्रदान की थी। आप अपने जन्म स्थान सौरई में नये बने जैन मंदिर के दर्शन की भावना लेकर शिवपुरी से विहार करते हुए वहाँ पहुंचे थे। इसी दौरान उनकी अकस्मात समाधि हो गयी। क्षुल्लक ध्यान भूषण जी महाकवि के रूप में जाने जाते थे। सिध्दान्त ग्रंथों, अध्यात्म, ध्यान,योग, छन्द, अलंकार, काव्य रचना, वास्तु विद्या में उनकी विशेष रुचि थी।

ललितांक जैन सौरई ने बताया कि क्षुल्लक ध्यान भूषण का गृहस्थ अवस्था का नाम मन भावन जैन था। 1 जुलाई 1970 को सौरई में सेठ मथुराप्रसाद एवं माता ललिता जैन के यहां जन्म हुआ। उन्होनें साढूमल, सागर के जैन संस्कृत विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण की थी।

विनम्र श्रद्धांजलि

जैन समाज ने श्री गणेश कुमार जी राणा के रूप में एक अनमोल रतन खो दिया है, उनके असामयिक निधन का समाचार पाकर हम सभी को अत्यंत दुख हुआ। वे सदैव समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाते थे। वे जीवनपर्यंत अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुडे रहे। वे दिगंबर जैनों की प्रतिनिधि संस्था भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक सदस्य भी थे और तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यों में उनका बहुमूल्य मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता था। वे परम मुनि-भक्तथे और साधुओं की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे, उन्होंने राजस्थान व देश के अन्य राज्यों के प्राचीन के सरंक्षण, जीर्णोध्दार एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई। उनका निधन संपूर्ण जैन जगत्के लिए एक आइाप रणीय क्षति है। हम तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर दिवंगत्आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात चंद्र जैन जी एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष एवं महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा जी ने श्री गणेश राणा जी के निधन को संपूर्ण जैन जगत के लिए अपूरणीय क्षति हुई है।

डॉ.माणिकचन्द्र जैन मुंडफोड़ा जी उदयपुर का निधन अपूरणीय क्षति

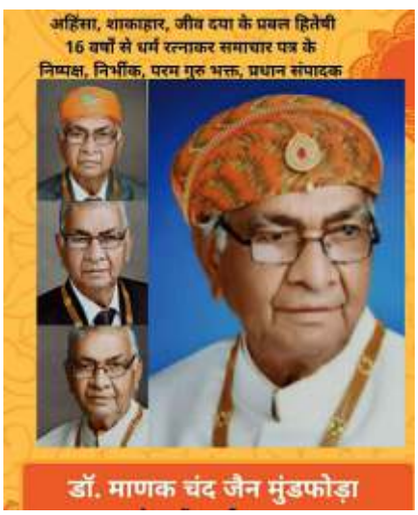

वर्ष 2020 जाते-जाते दुःखित कर गया। वरिष्ठ समाजसेवी एवं विभिन्न संस्थाओं को अपने अनुभव से लाभान्वित करने वाले आदरणीय डॉ.माणिकचन्द्र जैन मुंडफोड़ा जी उदयपुर (राजस्थान) का 31 दिसम्बर 2020 को आकस्मिक निधन का समाचार स्तब्ध करने वाला है।

आपने सेवानिवृत्त होने के बाद अपना पूरा जीवन साधु- संतों की सेवा एवं सामाजिक सेवा में लगा दिया। वे धर्मरत्नाकर समाचार पत्र बराबर प्रकाशित करते थे। वे इस समाचार पत्र में संपादक मंडल में मुझे भी स्थान दिए थे। उन्हें मैं 'दादा' कहकर पुकारता था, ऐसे ही अनेक लोग उन्हें 'दादा' कहते थे। उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए अनेक समाजसेवी संस्थाओं ने उन्हें विभिन्न पुरस्कारों, उपाधियों से अलंकृत किया था। अनेक संतों के सान्निध्य में उन्हें सम्मानित किया गया।

उनके साथ मेरी अनेक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। श्रवणवेलगोला में दो-तीन बार उनके साथ कार्यक्रम साझा किया, विभिन्न स्थानों पर अनेक बैठकों, अधिवेशनों में उनके साथ रहे, पिछले वर्ष यरनाल कर्नाटक यात्रा में पूरी यात्रा उनके साथ की। जब उदयपुर राजस्थान एक सेमिनार में गए तो उनके अत्यधिक स्नेह के कारण उनके यहाँ भोजन के आतिथ्य को न नहीं कर पाया। साथ ही उन्होंने स्वयं साथ में चलकर उदयपुर के अनेक स्थानों का भ्रमण और दर्शन कराया तथा खुद घर से स्कूटर पर स्टेशन तक छोड़ने भी आये। लॉकडाउन, कोविड के दौर में हमेशा उनसे फोन पर वार्ता होती रहती थी। वे बहुत ही सरल, सहज और हँसमुख प्रवृत्ति के सेवाभावी व्यक्तित्व थे। हमेशा सकारात्मक कार्यों में संलग्न रहते थे। प्रभावना जन कल्याण परिषद के वे संरक्षक तो थे ही उनका परिषद से बहुत निकटता से सम्बंध था।

मुण्डफोड़ा जी के निधन से पत्रकारिता जगत की अपूरणीय क्षति तो हुई ही है साथ ही समाज ने एक ऊर्जावान, निष्ठावान, कर्मठ व्यक्तित्व खो दिया है।

प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो तथा परिवारजनों को इस अपार दुःख को सहन करने की असीम क्षमता प्राप्त हो। उनका निधन अपूरणीय क्षति है।

न्यायमूर्ति श्री नरेन्द्रमोहन कासलीवाल जी का निधन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम् सम्मानीय सदस्य न्यायमूर्ति श्री नरेन्द्रमोहन कासलीवाल जी के निधन १० जनवरी २०२१ को जयपुर में हो गया है। कासलीवाल जी के निधन से जैन जगत क्षुब्ध है उन्होंने जैनों का गौरव समूचे देश में बढ़ाया है। आप सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश थे।

श्री महावीर सोगानी जी का निधन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम् सम्मानीय सदस्य श्री महावीर सोगानी जी का दुःखद निधन दिनाँक 1 जनवरी 2021 की रात्रि 2 बजे रांची में हो गया है।

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी परिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति विनम्र श्रद्धासुमन एवं परिवार जन के प्रति शोक संवेदना अर्पित करता है।

श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ पर संयम-कीर्ति-स्तम्भ का लोकार्पण
पहुँचे केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल

संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य पुज्य मुनिश्री 108 प्रमाणसागर जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका रत्न 105 श्री दृढ़मती माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री पिसनहारी मढिय़ा तीर्थ, जबलपुर में ६ जनवरी २०२१ को केंद्रीय पर्यटन एवं

संस्कृति राज्यमंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल का पूज्य मुनिश्री 108 श्री प्रमाणसागर जी महाराज के दर्शन हेतु आगमन हुआ।

आचार्यश्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के पावन पुनीत तप को स्थापत्य रूप में संजोकर श्रीपिसनहारी तीर्थ मढ़िया ट्रस्ट द्वारा संयम कीर्ति स्तम्भ का निर्माण किया गया। मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज, मुनिश्री अरह सागरजी महाराज, आर्यिका रत्न श्री दृढ़मति माताजी ससंघ की उपस्थिति में जैन मंत्रों के बीच केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)श्री प्रहलाद पटेल ने जबलपुर में इस संयम कीर्ति स्तम्भ को लोकार्पित किया। इसके पूर्व श्री प्रहलाद पटेल की महाराजश्री से भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन पर गहन चर्चा हुई। धर्म सभा में केन्द्रीय मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने शंका समाधान सत्र कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए कहा कि महाराजश्री के निकट आने पर हम लोग श्रद्धा से भर जाते हैं एवं शंकाओं का स्वत: समाधान हो जाता है। उन्होंने कहा कि आपके आशीर्वाद से मेरे द्वारा लोकार्पित यह कीर्ति स्तम्भ युगों युगों तक आचार्यश्री के संयम व तप की महत्ता को जन सामान्य के बीच में गुंजारित करता रहेगा।

पुण्य के उदय में पुण्य को बढ़ाने के कार्य करना उचित है- आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

नेमावर तीर्थ -- पुण्य के उदय में पुण्य को बढ़ाने के काम करते रहना चाहिए। पुण्य से ही पुण्य बढ़ सकता है। पुण्य पलड़े में हो तो धर्म ध्यान करने में भी अनुकूलता मिल जायेगी। विषय कषायों में रमने से पुण्य नष्ट होता चला जाता है उक्त आशय के उद्गार सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र तीर्थ नेमावर में धर्म सभा को संबोधित करते हुए परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री विद्या सागर जी महाराज ने व्यक्त किए।

आचार्य श्री ने कहा कि दुर्लभ वस्तु का संग्रह नहीं करना, उसका उपयोग जन जन के लिए होना चाहिए। उन्होंने कहा कि संयम बहुत दुर्लभ है इसे लेने के लिए देवता भी तरसते हैं। साधना और आराधना युवा अवस्था में की जाती है, युवा अवस्था को तपस्या के लिए सबसे उपयुक्त समय माना गया है।

ज्ञान वृद्ध के साथ तपो वृद्ध होना चाहिए

उन्होंने कहा कि वृद्धावस्था तो आने वाली ही है किन्तु ज्ञान वृद्ध तपो वृद्ध हो तब ही वृद्धावस्था की सार्थकता है। जैसे समुद्र में ज्वार भाटा आता है वैसे ही यदि उत्साह हो तो आप लोगों को इतनी सर्दी भी नर्मदा के इस पावन तट पर आने से नहीं रोक सकती है। उत्साह होने पर सर्दी गर्मी का पता ही नहीं चलता।

आचार्यश्री ने कहा कि हर श्रावक के जीवन में व्रत संयम होना चाहिए। पहली प्रतिमा दर्शन प्रतिमा का पालन करते हुए धीरे धीरे अपनी साधना शक्ति के अनुसार आगे बढ़ते रहना चाहिए।

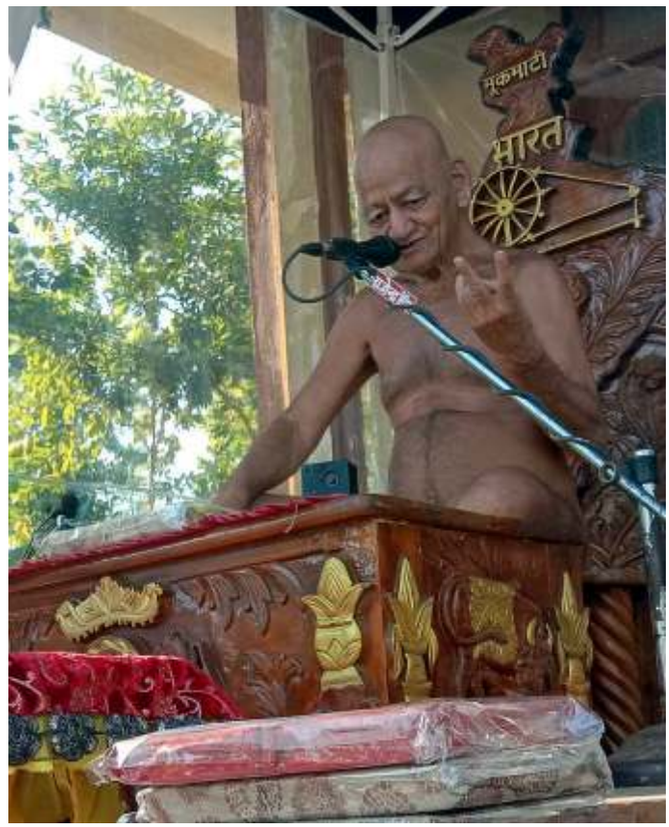

आर्यिकाश्री १०५ सत्यार्थमति माताजी का सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण

जबलपुर (मध्यप्रदेश), पूज्य मुनिश्री 108 प्रमाणसागर जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका रत्न 105 श्री दृढ़मती माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ, जबलपुर मे संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर मुनि महाराज से दीक्षित व आर्यिकाश्री दृढ़मती माताजी की संघस्था पूज्या आर्यिकाश्री सत्यार्थमती माताजी का सल्लेखनापूर्वक समाधि मरण ३ जनवरी २०२१ को गढ़ा, जबलपुर में चतुर्विध संघ की साक्षी में हुआ।

आर्यिकाश्री सत्यार्थमती माताजी का जीवन परिचय

जन्म -21 फरवरी 1972 तद्नुसार माघ कृष्णा ६, संवत्-२०३३,मंगलवार
जन्म नाम -'ब्र.सुनीता जैन'
जन्म स्थान -कटनी, म.प्र.
माता का नाम - श्रीमती चंदाबाई,
पिता का नाम - श्री कपूरचंद जैन
शिक्षा- मैट्रिक
ब्रह्मचर्य व्रत - 2 जनवरी 1989,पनागर,मप्र
दो प्रतिमा - 1990 में सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर।
आर्यिका दीक्षा - 06 जून 1997, ज्येष्ठ शुक्ल १, वि.स. २०५४
आर्यिका दीक्षा स्थान -सिद्धक्षेत्र नेमावर, मप्र
दीक्षा गुरु - आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज
संघस्थ- आर्यिका दृढ़मती माताजी।

विशेष- आप शांतस्वाभी आर्यिका माताजी थीं,लंबे समय से कैंसर जैसी शारीरिक व्याधि को सहन करते हुए भी सदैव आत्मकल्याण हेतु श्रमरत रहती थीं। आपके चरणों में शतशः वंदन व भविष्य में वीतराग चारित्र सहित निर्वाण दशा की उपलब्धि हो। तीर्थक्षेत्र कमेटी माताजी के श्रीचरणों में शत-शत् वंदामि निवेदित करते हुए यह प्रार्थना करती है कि माँ शीघ्र ही मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त करें।

दान का देने का लाभ तुरंत देने में ही मिलता है: मुनिश्री अनंतसागर

बीना- खिमलासा के त्रिमूर्ति जिनालय में आयोजित अष्टदिवसीय विधान के तृतीय दिवस पर विशाल इंद्र-इंद्राणी सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री अनंतसागर जी महाराज ने कहा कि दान हमेशा अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुरूप ही देना चाहिए। झूठी वाह-वाही लूटने एवं यशकीर्ति की चाह में कभी दान की घोषणा न करें इससे परिवार में अशांति ही बढ़ती है। अशांति से कलह उत्पन्न होती है, जो परिवार के लिए ठीक नहीं। जहाँ तक बनसके दान देने की घोषणा करने के तुरंत बाद ही दान दे देना चाहिए, इससे दान देने वाले श्रावक को कई गुना लाभ की प्राप्ति होती है।

मुनिश्री अचलसागर जी महाराज ने अनुशासित जीवन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि जब मनुष्य के जीवन में अनुशासन खत्म होने लगता है तभी नाना प्रकार की विसंगतियाँ और विकृतियाँ जन्म लेती हैं। ऐसी स्थितियाँ ही समाज में विखराव व राष्ट्र में दुराग्रह उत्पन्न करती हैं, वहीं घर, परिवार अशांति और तनाव के केन्द्र बनते है। जब तक स्वयं के जीवन में अनुशासन नहीं होगा तब तक कोई देश महान नहीं हो सकता और घर स्वर्ग नहीं बन सकता।

मुनिश्री ने कहा कि अनुशासित जीवन से ही समर्पण संभव है। समर्पण ही कंकरीले रास्ते को सुगम बना सकता है। अनुशासन स्वयं पर चैकीदारी करता है और जब व्यक्ति अपने कार्यों पर नजर रखेगा तब उसे भली-भांति यह ज्ञान होता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह गलत है अथवा सही। आज तो व्यक्ति इतना अनुशासनहीन, कर्तव्य विमुख और आलसी हो गया है कि उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान ही नहीं रहता। अब तो खान-पान को लेकर, पहनने के कपड़ों तक के प्रति कोई अनुशासन नहीं रहा है। आज शास्त्र, गुरू के प्रति आस्था, श्रद्धा, व अनुशासन की भावना लुप्त हो गई है, जिसके फलस्वरूप आज चारों तरफ अशांति व तनाव का माहौल बढ़ रहा है। सादा जीवन उच्च विचार की भावना ही तो अनुशासन की परिचायक है। अनुशासन जहाँ जीना सिखाता है, वहीं अनुशासनहीनता पतन का कारण है। अनुशासन से मोक्ष तक संभव है, जबकि अनियंत्रित जीवन के कारण ही घर-घर में दानवी मनोवृत्ति का इजाफा हो रहा है।

मुनिश्री भावसागर जी महाराज ने कहा कि आज बच्चों व बड़ों का जीवन जिस तरह से बिगड़ रहा है वह बहुत बड़े खतरे का संकेत है। बच्चों में जब घर के वातावरण से सुसँस्कार नहीं मिलेंगे और स्कूल की शिक्षा भी महज डिग्री प्रदान करने वाली किताबी ज्ञान तक बनकर रह जायेगी, तो फिर देश का कल्याण कैसे संभव हो पायेगा। जब खान-पान में ही अनुशासन नहीं रहा फिर छोटा हो या बड़ा, उनमें विनय व सज्जनता के गुण कैसे विकसित होंगे। फिर बढ़ती उच्चश्रृंखलता पर कैसे लगाम लगेगी। संयम, त्याग, परोपकार, मानवता, भाईचारा, सद्भावना, वात्सल्य-प्रेम कैसे बढ़ेगा। कहावत भी है कि 'जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन'। अनुशासन की जीवन सफर में पग पग पर जरूरत है। क्या खाना है, क्या पीना है, यदि इस पर भी विवेक की लहर जीवन में चल पड़ी तो समझ लेना हम धर्म की शरण में चल पड़े हैं। अनुशासित जीवन का नाम ही तो धर्म है।

शांति कारक मंत्रोच्चारण के साथ शांति विधान सम्पन्न

सोनीपत शहर! प्रातःस्मरणीय परम पूज्य संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य पूज्य मुनि श्री 108 सुधासागर जी महराज के मंगल आशीर्वाद से एवं उनकी पावन प्रेरणा से शांति प्रदायक, शांति कारक एवं विश्व शांति की मंगल कामना हेतु से श्री 1008 शांति नाथ महामण्डल विधान का आयोजन किया गया! भक्त श्रृद्धालुओं के द्वारा बिधान जी मण्डल मैं क्रमशः 8,16,32 और 64 अर्घ्य अति उत्साहित मन से भक्ति भाव पूर्वक 1008 श्री पारस नाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर सोनीपत शहर हरियाणा में समर्पित किये गये! कार्यक्रम के बिधानाचार्य पं. देवेश कुमार शास्त्री बलेह के बिधानाचार्यत्व में उक्त कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ! प्रातःकालीन बेला मैं मंगलाष्टक एवं दिग्बन्धन के साथ 108 कलशों से श्री जी का मंगल अभिषेक, शांतिधारा किया गया, साथ ही साथ दोपहर में श्री शांतिनाथ महामण्डल बिधान का आयोजन भी

किया गया बिधान जी मण्डल पर मंगल कलश एवं मगल दीपक स्थापन के साथ मां जिनवाणी स्थापना की गई पूज्य आचार्य श्री के चित्र का चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया! पल आते है, पल जाते है! कुछ दिल में उतर जाते है, कुछ दिल से उतर जाते है! ऐसे ही आने वाले पलों के अंतर्गत नये वर्ष का स्वागत् धर्ममय,भक्ति मय, वातावरण के साथ किया ताकि आने वाला समय सभी के जीवन मैं सुख शांति एवं समृद्धि लाये महामारी शांत हो ऐसी भावना को लेकर उक्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया! पारस अम्बर एण्ड पार्टी ने संगीत ध्वनियों के साथ सभी श्रृद्धालुओं को भक्ति रस का रसास्वादन कराया! कार्यक्रम में श्री संजीव जैन, श्री अवनीश जैन, श्री सुशील जैन, श्री प्रवीण जैन, एवं महिला मण्डल की प्रधान श्रीमती नीरु जैन कार्यकारिणी सदस्या श्रीमती ईना जैन, श्रीमती अंजू जैन, श्रीमती सीमा जैन, श्रीमती ललिता जैन आदि समस्त श्रृद्धालुओं ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर पुण्य लाभ अर्जन किया!

"मुनिभक्त जागरण सम्मेलन" भोपाल के भेल दशहरा मैदान में उमड़ा जनसैलाब

सम्मेलन में पहुँचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जी

योगेश चंद्र काफी समय से दिगंबर जैन मुनियों, आचार्यों व श्वेतांबर जैन आचार्यों के विरुद्ध सामाजिक माध्यमों (व्हाट्सएप, टेलिग्राम, फेसबुक आदि) पर अत्यंत अशोभनीय, निम्नस्तरीय, अनर्गल और आधारहीन टिप्पणियाँ कर रहा है। इसने व्हाट्सएप, टेलिग्राम, फेसबुक आदि अनेक ग्रुप बना रखे हैं, जहाँ यह व्यक्ति ग्रुप एडमिन के रुप में जैन संतों के विरुद्ध लगातार झूठे, कपोल कल्पित और मनगढ़ंत आरोप भी प्रसारित करता रहता है।

मुनि निंदकों के विरोध में 3 जनवरी 2021 को भोपाल स्थित दशहरा भेल मैदान में एक विशाल "मुनिभक्त जागरण सम्मेलन" का आयोजन किया गाया जिसमें मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र एवं अन्य अंचलों से जैन धर्मावलम्बियों व मुनिभक्तों ने एकत्रित होकर मुनि निंदकों के विरोध में आंदोलन का शंखनाद किया । इस सम्मेलन में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद जैन जी अति विशेष अतिथि के रूप से उपस्थित रहे।

सम्मेलन में भारी संख्या में उपस्थित मुनिभक्तों को सम्बोधित करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्टीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद जैन ने कहा कि दिगम्बर संस्कृति अत्यंत प्राचीन एवं विकसित संस्कृति है जो अहिंसा अपरिग्रह तप त्याग को व्यहारिक रूप देने वाली

संस्कृति है हमारी संस्कृति पर ईर्ष्या के कारण आक्रमण होते रहे हैं इस संस्कृति पर प्रत्यक्ष व परोक्ष आक्रमण हुए हैं। प्रत्यक्ष आक्रमण तो अन्य धर्म के लोगों ने किया तथा परोक्ष आक्रमण समाज के भीतर के लोगो द्वारा किया गया। आगम में परिवर्तन करके रीति रिवाज तत्व संदेह पैदा किये गए हैं, ये आक्रमण योजनाबद्ध तरीके से प्रेम मिश्रित छल भाईचारे एवं एकता की आढ़ में धन और बल का सहारा लेकर खुद की शिथिलता को छिपाए रखने के लिए किया गया है। उन्होंने आगे कहा कि प्राचीनतम् दिगम्बरत्व की परम्परा के संरक्षण की आशा अब वर्तमान पीढ़ी पर टिकी है उस आशा को पूरा करने के लिए पंथभेद मिटाकर प्रेम, त्याग, समर्पण की भावना से "दिगंबरा सहोदरा सर्वे" सूद्रवाक्य के आधार पर हम देव शास्त्र गुरु की रक्षा कर सकते हैं।

हम दिगम्बर मुनियों के भक्त हैं और हमेशा रहेंगे क्योकि जैन धर्म की मूलधारा व सबसे प्रमुख कड़ी दिगम्बर मुनि होते हैं हम देव शास्त्र गुरु के भक्त है इन तीनो के बिना जैन धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती है आगम में स्पष्ट आया है कि पंचम काल के अंत समय तक मुनियों का विचरण इस पृथ्वी पर होता रहेगा परंतु पिछले कुछ दशकों में कुछ क्षम्य विद्वानों ने आगम की इस व्याख्या को बदल डाला है और दिगम्बरत्व को नकारने लगे हैं इन्ही विद्वानों ने एक ऐसा गिरोह खड़ा किया है जो दिगम्बरत्व के अस्तित्व को ही चुनौती

देने लगा है।

अध्यक्ष जी ने जोर देकर कहा कि हम मुनिभक्त सहनशील अवश्य हैं पर कायर नहीं इस बात को गांठ बांध कर सुन लेना तीर्थक्षेत्र कमेटी दिगम्बर जैन समाज की एक प्राचीन संस्था है। ऐसी परिस्थिति में तीर्थक्षेत्र कमेटी का प्रथम सेवक होने के नाते हमारा जो नैतिक दायित्व बनता है मैं आज इस मंच से आचार्य भगवंतों व मुनियों के विरुद्ध दुष्प्रचार करने वालों को चेतावनी देता हूँ कि समाज में विष घोलने से बाज आएं।

सम्मलेन में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित परिवहन मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत ने कहा कि वे संतो के विरोध में सोशल मीडिया पर टिप्पणी करने वालों के विरुद्ध कानून बनाने के लिए मुख्यमंत्री जी से चर्चा करेंगे। संतों के खिलाफ किसी को टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है। आचार्य श्री इस युग के भगवान है उनकी कठोर साधना ने सभी धर्म के मानने वालों को प्रभावित किया है।

आयोजन में उपस्थित पूर्व महापौर श्री आलोक शर्मा ने कहा कि वह स्वयं मुनि भक्त हैं उन्होंने योगेश चंद के विरोध में अपनी ओर से भोपाल कोतवाली थाने में एफआईआर दर्ज कराई है।

प्रस्ताव पारित के बाद तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा सभी उपस्थित श्रद्धालुओं ने शपथ ग्रहण की कि आज दिनांक 3 जनवरी दिन रविवार को दशहरा मैदान में हम सभी लोग देव शास्त्र गुरु के अनुयायी दिगम्बर जैन श्रावक-श्राविकाएं देवादिदेव और उनकी वाणी (जिनवाणी), आचार्य प्रणित शास्त्रों को एवं वर्तमान में विद्यमान सभी आचार्य, उपाध्याय एवं साधुओं को साक्षी मानकर शपथ लेते हैं कि हम एक हैं हमारे देव, शास्त्र एवं वर्तमान के आचार्य, उपाध्याय व साधू जो हमारे पंचपरमेष्ठी हैं उनके प्रति अपने सिद्धांत को जीवन के अंतिम क्षण तक अक्षुण्य बनाकर रखेंगे।

शाश्वत ट्रस्ट ने किया मधुबन में कार्यरत कर्मचारियों व मजदूरों को कंबल वितरण

पूरा विश्व वर्तमान समय में कोरोना काल में जूझ रहा है, इसका प्रभाव कुछ क्षेत्रों में ज्यादा ही देखने को मिल रहा है, जैसे कि जैनियों के विश्वप्रसिद्ध तीर्थस्थल श्री सम्मेदशिखरजी में भी इसका प्रभाव अधिक पड़ा है, बाहर से आने वाले श्रद्धालु वर्तमान समय में न के बराबर श्री सम्मेद शिखर जी पहुँच रहे हैं, इसका सीधा असर शिखरजी के सभी संस्थानों पर भी दिखाई पड़ रहा है, संस्थान के कर्मचारियों, छोटे-बड़े व्यापारियों आदि में निराशा दिखाई पड़ रही है, वहीं दूसरी ओर ठंड का भी मौसम चरम पर है, इस हाड़ कंपाती ठंड में वैसे भी लोगों का जीना मुहाल हो गया है, लोगों के पास ठंड से बचने के लिए पर्याप्त गर्म कपड़े नहीं है, ऐसे में मधुबन स्थित श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट ने जगदीश जैन-पानीपत के सौजन्य से मधुबन की सभी संस्थाओं के कर्मचारियों को कम्बल वितरित किए हैं।

कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुऐ सबसे पहले इस कोरोना काल में समाज के कुछ लोगों का सम्मान भी किया गया, जो निस्वार्थ भाव से अपनी सेवा संस्था को दे रहें हैं मधुबन समाज से श्रेयांस जैन लगातार पार्श्वनाथ टोंक पर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित दैनिक शांतिधारा संपन्न करवा रहे हैं। ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा ने उनका सम्मान किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इसके बाद महामंत्री के द्वारा कंबल वितरण की शुरुआत की गई, कम्बल पाकर लोगों ने ट्रस्ट टीम की भूरी-भूरी प्रशंसा की बल्कि यह भी कहा कि इतने दिनों से उनकी कोई सुध नहीं ले रहा था।

श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट की योजना इसके बाद भी मधुबन पंचायत के आस-पास के गांवों में कंबल वितरण करने की है, इस योजना के तहत उन गांवों में भी जाकर वितरण किया जायेगा जो आम तौर पर बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटे हुए हैं, इन गांवों में वाहनों का जाना तो दूर पैदल पहुंचना भी बहुत दुष्कर कार्य है। कंबल वितरण एक या दो सप्ताह और चलेगा साथ ही साथ उनकी यह कोशिश भी रहेगी कि कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति छूट न जाये, प्रथम चरण में सभी संस्थाओं के 500 कर्मचारियों व मजदूरों को इसका लाभ मिला है।

ट्रस्ट इन क्षेत्रों में न केवल कंबल वितरण करता है बल्कि सामाजिक एवं जनकल्याणकारी कार्य भी समय-समय पर जैसे विकलांग शिविर, कैंसर शिविर, वृक्षारोपण शिविर, लॉकडाउन में राशन वितरण, खेल-कूद के क्षेत्र में भी कई आयोजन करता रहा है। कम्बल वितरण के मौके पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रबंधक श्री देवेन्द्र जैन, कुन्दकुन्द ट्रस्ट के प्रबंधक श्री प्रकाश भाई, सेवायतन के प्रबंधक श्री कैलाश जैन, स्वच्छता समिति के अध्यक्ष श्री बबलू, ट्रस्ट के प्रबंधक श्री प्रदुमन जैन, प्रबंधक श्री संजीव जैन, ऑफिस एडमिनिस्ट्रेटर ए.सईदी, श्री पवन शर्मा, श्री अनूप जैन, श्री गंगाधर महतो, श्री मुकेश महतो, श्री अशोक दास, श्री शैलेन्द्र जैन पुजारी, श्री प्रियनाथ जैन, श्री रोबिन बनर्जी समेत अन्य कई लोग उपस्थित थे।

घोषणा पत्र

प्रकाशन अवधि : मासिक
प्रकाशक/मुद्रक/संपादक : उमानाथ रामअजोर दुबे
राष्ट्रीयता : भारतीय
मालिक : भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी हीराबाग, सी. पी. टैंक मुंबई-400004

द्वारा त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी. रोड, सी.पी. टैंक, मुंबई-400004 से मुद्रित कर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, मुंबई 400004 से प्रकाशित।

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है।

- उमानाथ रामअजोर दुबे, संपादक

सम्मेद शिखर जी पर्वत की पवित्रता अक्षुण्ण रखी जाएगी

कमेटी ने लिखा गिरिडीह उपायुक्त को पत्र

कोरोना काल की तालाबंदी के लम्बे अंतराल के बाद जैनों के सर्वोच्च तीर्थ सम्मेद शिखरजी की यात्रा पुनः प्रारम्भ हो गयी है, सीमित संख्या में यात्री तीर्थ वंदना के लिए आने लगे हैं। वंदना करने आये कुछ तीर्थयात्रियों से सोशल मीडिया पर पोस्टें डालकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का ध्यानाकर्षित किया है कि पहाड़ पर आने वाले अजैन लोग सिद्ध क्षेत्र की पावन भूमि पर अवांछित कार्य करते हुए देखे गए हैं। कतिपय यूट्यूब चैनल ने पूरे मामले को बहुत बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत किया था

अजैन छात्र-छात्राएँ जूते-चप्पल पहन कर पहाड़ पर चढ़ते हैं तथा धूम्रपान, मदिरापान करते हुए देखे गए हैं, हालांकि इन घटनाओं की पुष्टि नहीं हुई फिर भी सूचना मिलते ही कमेटी के स्थानीय कार्यालय के प्रबंधक आदि को सचेत किया गया और उनसे रिपोर्ट मँगाई गई है कि उनके होते हुए ऐसा क्यों हुआ। तुरंत कार्यवाही करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद जैन जी व कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा जी अतिरिक्त गार्ड तैनाती के आदेश दिए हैं, मुख्य प्रवेश द्वार पर बैरिकेडिंग करके जाँच चौकी बनाई जा रही है ताकि हर आने-जाने वाले की जाँच हो। इस संबंध में श्री राहुल कुमार सिन्हा उपायुक्त, जिला समाहरणालय, गिरिडीह (झारखंड) को पत्र लिखा है तथा प्रतिनिधि मंडल ने १२ जनवरी २०२१ को उपायुक्त महोदय से भेंट करके ज्ञापन सौंपा है और उपायुक्त ने आश्वासन दिया है वे अपने स्तर प्रशासन की ओर सभी आवश्यक कदम उठा रहे हैं व उन्होंने १४-१६ जनवरी २०२१ को अतिरिक्त पुलिस बल तैनाती का आदेश दिया है।

शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार अजमेरा ने बताया कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के कर्मचारियों द्वारा नियमित निरीक्षण किया जाता है, अब उन्हें प्रत्येक सप्ताह पर्वत का निरीक्षण करने के आदेश दिए गए हैं, पर्वत की पवित्रता के संबंध में

पहले से बोर्ड लगे हुए हैं एवं नए बोर्ड लगाने के निर्देश दिए गए हैं। श्री राजकुमार अजमेरा जी ने पर्वत की वर्तमान स्थिति में सुधार लाने के लिए

पारसनाथ टोंक पर की गई बैरिकेडिंग

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सम्मेदशिखरजी में लगाए गए निर्देश पट

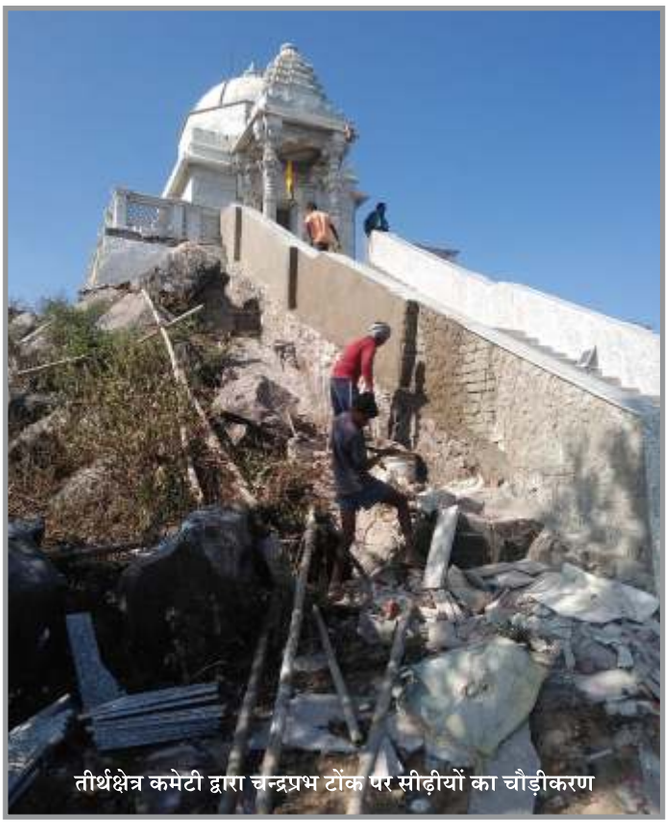
तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा चन्द्रप्रभ टोंक पर सीढ़ीयों का चौड़ीकरण

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा चन्द्रप्रभ टोंक पर सीढ़ीयों का चौड़ीकरण

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सम्मेदशिखरजी में लगाए गए निर्देश पट

गिरिडीह जिले के डीसी से बात की है।

उपायुक्त को प्रेषित पत्र में अध्यक्ष महोदय ने लिखा है सम्मेद शिखरजी पर्वत जैनों का एक तीर्थक्षेत्र व सर्वोच्च धार्मिक स्थल है इसलिए राज्य सरकार ने २०१८ में इसकी पवित्रता अक्षुण्य रखने के लिए हर कदम उठाने का आदेश जारी किया हुआ है।

प्रशासन की ओर से अविलंब उठाए जाने चाहिए-

१. पर्वत पर जाने के सभी प्रमुख मार्गों व मुख्य प्रवेश द्वार पर चैकपोस्टों/बैरिकेड की स्थापना की जाए।

२. चैक पोस्ट -बैरिकेड पर उपस्थित अधिकारी-पुलिस कर्मी पर्वत पर जाने वाले सभी लोगों के सामान की जाँच करें ताकि वर्जित वस्तुओं (शराब, गुटखा, नशीले पदार्थ, प्लास्टिक की बोतलें, अंडा, मांस आदि) को पर्वत पर पहुँचने से रोका जा सके।

कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष ने की आंध्रप्रदेश के प्राचीन क्षेत्रों की यात्रा, तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा किए जा रहे कार्यों का किया निरीक्षण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश के प्राचीन जैन मंदिरों की जीर्णोद्धार के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा नए बोर्ड लगाए गए हैं, कमेटी ने नियमित देखरेख के लिए श्री सुरेश जैन की नियुक्ति की है। एनआर पुरा के भट्टारक श्री स्वामी जी के साथ कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष श्री विनोद बाकलीवाल आंध्रप्रदेश स्थित कम्मरचेडु, आदोनि, पिद्दाहुत्तूर, चिन्नाहुत्तूर एवं अन्य प्राचीन जैन मंदिरों की यात्रा करके निरीक्षण किया।

श्री बाकलीवाल के साथ बल्लारी के दिगंबर जैन समाज के कुछ पदाधिकारी भी आए थे। कम्मरचेडू नामक स्थल पर पहुँचे, जैन मंदिर

जीर्णशीर्ण अवस्था में है। मंदिर में भगवान पद्मप्रभ की जिनप्रतिमा विराजमान है। सभी ने आंध्रप्रदेश के करनूल जिले के पिद्दाहुत्तूर एवं चिन्नाहुत्तूर के प्राचीन मंदिरों के दर्शन कर वर्तमान स्थिति का जायजा लिया। यहाँ जैन श्रावकों के मात्र २ घर ही हैं तथा मंदिर को जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। तीर्थक्षेत्र कमेटी इसके लिए निरंतर कार्यरत है एवं कुछ अन्य संस्थाओं द्वारा कोई कार्य न करने के बावजूद जीर्णोद्धार का श्रेय लेने के लिए झूठे समाचार प्रकाशित किए जा रहे हैं। आंध्र प्रदेश के मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए समाज से अनुरोध है कि वे आगे आएं तथा 121000/- की राशि देकर प्रति मंदिर जीर्णोद्धार में सहयोगी बनें।

भोपाल में आयोजित मुनिभक्त जागरण सम्मेलन में श्री रवीन्द्र जैन पत्रकार को बनाया संयोजक

भोपाल। मप्र की राजधानी भोपाल में ३ जनवरी को देशभर के मुनिभक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। हजारों की संख्या में पहुंचे मुनिभक्तों के इस जागरण सम्मेलन की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि सम्मेलन में सभी पंथों के संतों के जयकारे गूंज रहे थे। मुनिभक्तों के हजारों हाथ एक साथ उठे। तय हुआ कि अब किसी कीमत पर मुनि निंदा सहन नहीं की जाएगी। मुनि निंदा करने वालों को दिगम्बर जैन ही नहीं माना जाएगा। मुनि निंदक योगेशचंद और उसके साथियों के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत कार्रवाई करने का प्रस्ताव भी पारित हुआ। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने मंत्री गोविंद राजपूत को समारोह स्थल पर भेजा जहां मंत्री ने घोषणा की कि मुनि निंदकों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। आवश्यकता पड़ेगी तो इसके लिए अलग से कानून भी बनाया जाएगा।

३ जनवरी को भोपाल के विशाल भेल दशहरा मैदान पर मुनिभक्त जागरण सम्मेलन का आयोजन किया गया। दिगम्बर जैन मुनिधर्म रक्षा समिति के बैनर पर हुए इस आयोजन में देशभर से हजारों मुनिभक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। विशाल पांडाल आचार्य विद्यासागर जी, आचार्य वर्धमान सागर जी, आचार्य विशुद्ध सागर जी, आचार्य कुंथ सागरजी, आचार्य पुलक सागरजी, मुनि सुधा सागरजी, मुनि समता सागर, मुनि प्रमाण सागर सहित सभी दिगम्बर आचार्यों, मुनिराजों के जयकारों से गूंज रहा था।

मुनि निंदकों के खिलाफ सबसे पहले एफआईआर कराने वाले भोपाल के वरिष्ठ पत्रकार रवीन्द्र जैन ने हुंकार भरते हुए साफ कहा कि अब मुनि निंदकों की खैर नहीं है। उन्होंने बताया कि किस तरह उन्होंने योगेश जैन और उसके साथियों को जेल के सीखचों के पीछे पहुंचाया। रवीन्द्र जैन ने कहा कि जब तक मुनि निंदकों को सजा नहीं दिला देंगे वे चैन से नहीं बैठेंगे। उन्होंने कहा कि भोपाल का यह आयोजन शंखनाद है। अभी सिंहनाद बाकी है। सागर जेल में हथकरघा के जरिए सैकड़ों कैदियों का जीवन बदलने वाली ब्रह्मचारिणी डॉ. रेखा जैन ने बताया कि मुनि निंदक योगेश सागर जेल में रहा है जहां उसने स्वीकार किया कि हथकरघा के जरिए अहिंसक वस्त्र बनाए जा सकते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचँद्र जैन ने मुनि निंदकों को चुनौती दी कि वे तत्काल अनर्गल प्रलाप बंद करें वर्ना कठोर कानूनी कार्रवाई के लिए तैयार रहें। भोपाल के पूर्व महापौर आलोक शर्मा ने कहा कि वे स्वयं आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य हैं और अपने गुरू के खिलाफ एक शब्द नहीं सुन सकते। यही कारण है कि उन्होंने स्वयं मुनि निंदक योगेश और उसके साथियों के खिलाफ भोपाल के कोतवाली थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। सागर के पूर्व सांसद के बेटे सुधीर यादव ने भी बताया कि मुनि निंदकों के कमेंट पढ़कर वे इतने गुस्से में थे कि उन्होंने भी सागर के कोतवाली थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। टीकमगढ़ के श्रीपाल नायक, जैसीनगर के अवधेश जैन, विदिशा के राजीव जैन, सागर के सुरेन्द्र मालथौन ने भी बताया कि उन्होंने किन परिस्थितियों में मुनि निंदकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई हैं।

चार प्रस्ताव हुए पारित

समारोह में शामिल वरिष्ठ समाजसेवी सर्वश्री प्रभातचँद्र जैन, हृदय मोहन जैन, वीरेश सेठ, स्वतंत्र जैन खिमलासा, श्रीश जैन ललितपुर, मुकेश जैन ढाना आदि ने चार प्रस्ताव पारित किए।

पहला प्रस्ताव -

जैन आगम एवं संविधान के अनुसार जो व्यक्ति या समूह देव शास्त्र एवं वर्तमान आचार्य, उपाध्याय, साधुओं को मानते हैं एवं उनके प्रति श्रद्धान रखते हैं वे ही दिगम्बर जैन होते हैं। अत: यह सभा प्रस्ताव करती है कि जो व्यक्ति या समूह देव शास्त्र एवं वर्तमान आचार्य, उपाध्याय एवं साधुओं के प्रति श्रद्धा नहीं रखते हैं एवं वर्तमान आचार्य, उपाध्याय, साधुओं की निंदा करते हैं वे दिगम्बर जैन नहीं हैं, इस आशय की घोषणा न्यायालय से कराई जाए। (प्रस्ताव ध्वनिमत एवं सर्वसम्मति से पारित)

दूसरा प्रस्ताव-

योगेशचंद जैन पिता स्व. श्री वैध गंभीरचंद जैन निवासी अलीगंज जिला एटा उत्तरप्रदेश द्वारा सोशल मीडिया पर जैन संतों के खिलाफ अनर्गल, आपत्तिजनक, निराधार, अश्लील आडियो-वीडियो पोस्ट डालकर पूरे भारत

में साधु-संतों के प्रति श्रद्धा रखने वाले जैन-अजैन व्यक्तियों की भावनाओं को भड़काया है एवं राष्ट्र के शांति एवं सांप्रदायिक सौहार्द्र भंग करने का कुकृत्य किया है। यह कृत्य राष्ट्र विरोधी गतिविधि की श्रेणी में आता है। अत: यह सभा प्रस्ताव करती है कि राज्य शासन द्वारा योगेशचंद्र जैन पिता स्व. वैद्य श्री गंभीरचंद जैन निवासी अलीगंज जिला एटा उत्तर प्रदेश के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाए। (प्रस्ताव ध्वनिमत एवं सर्वसम्मति से पारित)

प्रस्ताव तीन-

योगेशचंद्र जैन पिता स्व. वैध श्री गंभीरचंद जैन निवासी अलीगंज जिला एटा उत्तर प्रदेश ने वर्ष १९८८ में जयपुर विश्वविद्यालय से जैन श्रमण स्वरूप और समीक्षा विषय पर पीएचडी की है। इस पीएचडी को अवार्ड करने से पहले विश्वविद्यालय की टीम ने उनकी स्क्रिप्ट पर आपत्ति की थी क्योंकि योगेशचंद्र ने अपनी पीएचडी में हमारे आचार्य श्री १०८ देशभूषण जी महाराज,आचार्य श्री १०८ धर्मसागर जी महाराज, आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज, आचार्य श्री १०८ विद्यानंद जी महाराज के विरुद्ध नाम के साथ आपत्तिजनक टिप्पणियां की थीं। तत्कालीन विभागाध्यक्ष के अनुसार योगेशचंद ने विश्वविद्यालय में लिखित पत्र दिया था कि आपत्तिजनक टिप्पणियां वापिस लेंगे, लेकिन उन्होंने छलपूर्वक पीएचडी प्राप्त कर ली एवं आपत्तिजनक टिप्पणियों के साथ पुस्तक प्रकाशित कर साधुओं के प्रति दुर्भावना पूर्वक द्वेष फैलाया। अत: यह सभा प्रस्ताव करती है कि योगेशचंद्र जैन की पीएचडी को निरस्त कराने के लिए विश्वविद्यालय में वैधानिक कार्रवाई एवं इस कृत्य आपराधिक प्रकरण दर्ज कराया जाए। (प्रस्ताव ध्वनिमत एवं सर्वसम्मति से पारित)

प्रस्ताव चार –

दिगम्बर जैन धर्म के अनुयायियों की यह सभा प्रस्ताव करती है कि हमारे पंच परमेष्ठी के वर्तमान विद्यमान आचार्य, उपाध्याय व साधुओं के ऊपर कथित व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के द्वारा स्वयं को दिगम्बर जैन धर्म का बताकर/मानकर वर्तमान के मुनिराजों की निंदा/आलोचना/अश्लील शब्दावली का प्रयोग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया आदि में करके झूठ, मिथ्या, मनगढ़ंत प्रचार-प्रसार करते हैं। ऐसे व्यक्ति या समूह के खिलाफ प्रारंभ हुआ जागरण अभियान जिसका उद्देश्य जो देव शास्त्र व वर्तमान के गुरुओं को नहीं मानता, व उनकी निंदा करता है वह दिगम्बर जैन नहीं है कि मान्यता को न्यायालय में घोषित कराना, समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जागृत कर प्रत्येक गांव, कस्बे, नगर, महानगर तक इस बात को स्थापित करने के लिए आज हम यह प्रस्ताव करते हैं कि जागरण के लिए संपूर्ण संगठन को, जिसमें संगठन के नियम-विधान, संगठन का मुख्य कार्यालय, संगठन के मुख्य पदाधिकारियों का चयन, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज की मुख्य संस्थाओं के साथ समन्वय, प्रत्येक छोटे-बड़े नगर, जिले में इकाई का गठन एवं देव शास्त्र गुरू के प्रति सायबर अपराध में शामिल व्यक्तियों को सजा दिलाने के लिए एक विशेष विधि विशेषज्ञों की टीम के साथ आधुनिक सुविधाओं से संपन्न कार्यालय की स्थापना एवं जागरण के उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए अन्य जो भी आवश्यक हो उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हम संयोजक पद का सर्जन करते हैं। (प्रस्ताव ध्वनिमत एवं सर्वसम्मति से पारित) संयोजक पद के लिए श्री रवीन्द्र जैन पत्रकार, पुत्र स्व. श्री भगवानदास जैन निवासी १०-बी, प्रोफेसर कालोनी भोपाल को मनोनीत करने के लिए सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव करती है और उनसे अनुरोध करती है कि वे विधिवत सभी का आशीर्वाद लेकर संस्था के स्वरूप और गठन की कार्रवाई को आगे बढ़ाएं। (प्रस्ताव ध्वनिमत एवं सर्वसम्मति से पारित)

मंत्री ने दिया आश्वासन

समारोह में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने प्रतिनिधि के रूप में परिवहन एवं राजस्व मंत्री श्री गोविंद राजपूत को भेजा। मंत्री राजपूत ने भरोसा दिलाया कि मुनि निंदकों को कठोर दंड दिलाने के लिए सरकार हर संभव प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज केवल जैनों के नहीं जन-जन के संत हैं। कार्यक्रम में नरेन्द्र जैन वंदना, अरविंद सुपारी, पंकज सुपारी, पवन सुपर, श्रीश जैन ललितपुर, पंकज जैन ललितपुर, मुकेश जैन ढाना आदि उपस्थित थे।

- अविचल जैन, भोपाल

वर्ष के पहले दिन शान्तिधारा के साथ किया महा मस्तिकाभिषेक

थूवोनजी नये वर्ष पर लगारहा भक्तों का तांता

अशोक नगर स्थित अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में नव-वर्ष पर बड़ी संख्या में भक्तों ने पहुँचकर भगवान का भक्ति की। जगत कल्याण की कामना से महा शान्तिधारा की गई।

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संग्रहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाउंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi January 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**